गोसेवाके चमत्कार

(सच्ची घटनाएँ)

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

गोसेवाके चमत्कार

(सच्ची घटनाएँ)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

सम्पादक—हनुमानप्रसाद पोद्दार

॥ श्रीहरि: ॥

निवेदन

गायोंकी महिमा अपार है। प्राचीनसे अर्वाचीन साहित्यतक तथा लोकजीवनमें भी गोमहिमाकी परम्परा सर्वत्र व्याप्त है। इसीलिये प्राचीनकालमें आजकी अपेक्षा प्राय: सभी गो-सेवापरायण थे और गायें भी बहुत अधिक थीं, जिससे समग्र देशमें गो-जाति, गव्य-पदार्थ, श्रेष्ठ अन्न, सुख-शान्ति एवं समृद्धिका बाहुल्य था। यह प्रसिद्ध है कि देशमें दूध-दहीकी नदियाँ बहती थीं।

वर्तमान कालक्रमसे दुर्भाग्यवश आधुनिक सभ्यताके चाकचिक्यके कारण सात्त्विकतासे विचलित मनवाले लोग गो-भक्तिसे दूर हो रहे हैं, जिससे गो-वंशकी भारी उपेक्षा होती जा रही है और गायोंकी संख्या नगण्य-सी रह गयी है। परिणामत: देशमें दु:ख-दारिद्र्यका विस्तार हो रहा है और लोगोंमें हिंसा, क्रोध, लोभ तथा विलासिता बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि सर्वत्र अशान्ति भी व्याप्त होने लगी है।

कल्याणमें समय-समयपर गो-सेवाके दिव्य चमत्कारोंका प्रकाशन होता आया है। उन्हींमेंसे कुछ विशेष उपयोगी सामग्रीका संकलन कर लोकोपकारकी दृष्टिसे प्रस्तुत लघु पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। इसके अध्ययनसे लोगोंकी कुछ दृष्टि बदल सकती है, ऐसी आशा है। यदि ऐसा कुछ हुआ तो इसमें गो-गोविन्दका ही अनुग्रह मानना चाहिये।

—प्रकाशक
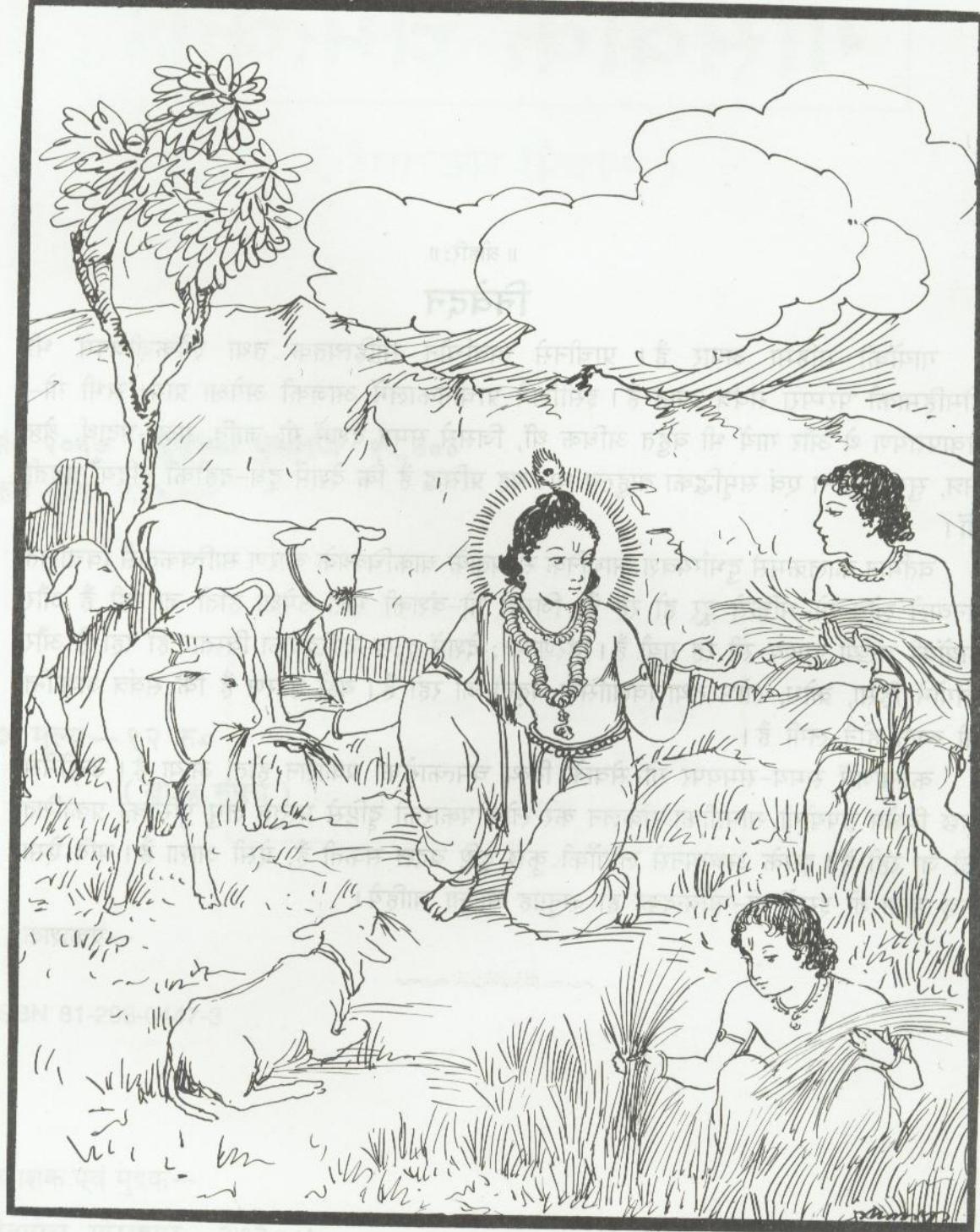
गोरक्षासे आत्मरक्षा

(लेखक—श्री डा० मोहन)

[मेरे पितामह श्रीजतीरामजीको निम्नलिखित सच्ची घटना स्वयं उन सज्जनने सुनायी थी, जो गोरक्षा करनेके कारण फाँसीसे बचे थे। जहाँतक हो सका—मैंने उनके भावोंकी पूरी रक्षा करते हुए अपनी भाषामें इसे लिख दिया है।—लेखक]

सन् १८५७ की गदरकी ज्वाला समस्त भारतमें फैल गयी थी। दिल्ली उसका केन्द्र था। प्रत्येक गली मरघट बनी हुई थी। स्थान-स्थानपर खूनके चिह्न बने थे। बलवा करनेवालोंने अच्छे-बुरेकी तमीज मिटा दी थी।

मैं बलवाइयोंका सरदार था। दिनभर लूट-मार करनेसे शरीर थक गया था। हड्डियाँ चूर हो गयी थीं। भूखके मारे मेरा बुरा हाल था। हमारी जेबें और फौजी थैलें मायासे पटे पड़े थे, परन्तु अन्नके लिये आँतें एक-दूसरेसे उलझ रही थीं।

हम सब-के-सब मुसल्मान थे और अन्नके लिये तड़प रहे थे। बलवाइयोंके डरसे बाजार उजड़ा पड़ा था। घरोंमें ताले लगे थे। हम सब थक गये थे, एक चौकमें इकट्ठे हो गये। हम कुल पाँच थे। मैं उनका अगुआ था। अधिक ताकत लगानेसे बहुत थक गया था।

मैं चौकके एक कोनेमें चबूतरेके नुक्कड़पर सुस्ताने लगा और अपने साथियोंसे कहा कि 'आपलोग कहीं-न-कहींसे खानेका बन्दोबस्त करें, नहीं तो मेरी जान निकलना ही चाहती है। सचमुच भूखसे मेरे पेटमें दर्द पैदा हो गया था, आँखोंके आगे अँधेरा छाता जा रहा था। मेरी हालत देखकर मेरे साथी तुरंत खाना लानेके लिये निकल पड़े।

थोड़ी ही देरमें मैंने देखा कि चारों-के-चारों एक मोटी-ताजी गायको घसीटते हुए लिये आ रहे हैं। पता नहीं, वह बेचारी उन भूखे भेड़ियोंके हाथोंमें कैसे पड़ गयी थी। उसकी गर्दनमें एकने अपनी पगड़ी बाँध दी थी और इससे पहले कि वे मेरी कोई राय लेते या मैं ही अपनी इच्छासे कुछ कहता कि उन्होंने चिल्लाती हुई गायके चारों पैर बाँधकर उसे जमीनपर गिरा दिया।
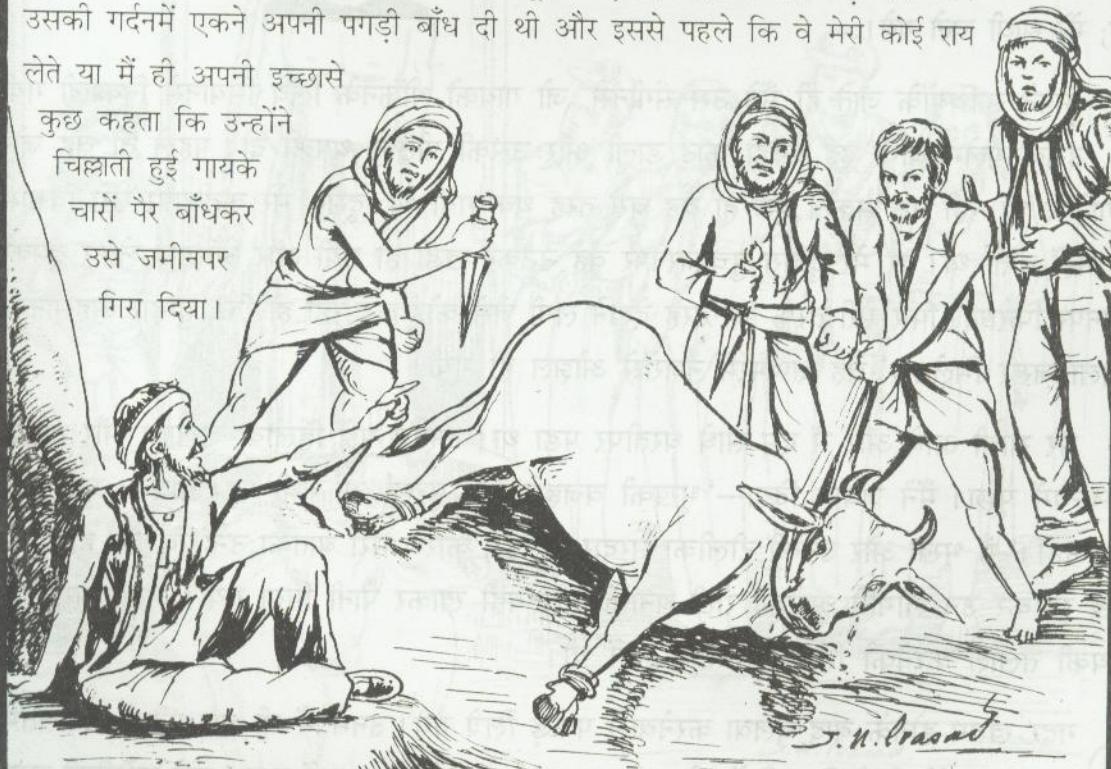
ऐसे गदरके वक्त बलवाई मुसल्मानोंके हाथसे एक बेज़बान गायको बचानेके लिये किसे फुरसत थी। उस समय धर्मके ठेकेदार और गो-रक्षापर लंबे-चौड़े लेक्चर झाड़नेवाले तथा बेईमानकी कब्रकी तरह निकली हुई तौंदपर हाथ फेरकर पैसे हजम करनेवाले लोग दुम दबाये किसी बिलमें घुसे पड़े थे और विपत्तिसे छुटकारा पानेके लिये शायद मन-ही-मन भगवान्‌से प्रार्थना कर रहे थे। गाय थक गयी थी। उसकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे और मैं भूखसे छटपटा रहा था। मेरा शरीर शिथिल हो गया था।

गायको देवता मानना और उसकी पूजा करना मेरे धर्मके विपरीत है। लेकिन उस बेगुनाह गायको उन भेड़ियोंसे घिरी देखकर, जो कुछ ही देरमें उसे अपने पेटमें डालनेके लिये तैयार थे और अपनी संगीनें तेज कर रहे थे, मेरी आत्मा काँप उठी। गाय गाभिन थी। उसे देखकर मुझे अपने देशमें पड़ी हुई अपनी गर्भवती पत्नीकी याद हो आयी। मैं काँप गया।

मैंने झट एक चाल चली। हिम्मत करके अपनी जगहसे उठा और साथियोंके पास जाकर उनसे कहा—'तुम देख नहीं रहे हो, भूखके मारे मेरी जान जाना चाहती है, मगर तुमलोग अभीतक अपने सरदारकी उदरपूर्ति करनेमें असमर्थ ही दीख रहे हो। तुमलोग जाकर लकड़ियाँ और नमक ले आओ, तबतक बाकी काम मैं करता हूँ। गाय बँधी है, इसके लिये मैं अकेला ही बहुत हूँ। मैं भूखसे बहुत घबरा गया हूँ, तुमलोग जल्दी जाओ।'

दुनियाको बनानेवाले मालिककी कृपा थी कि वे पहले लकड़ियाँ और नमक लाना भूल गये थे, अगर वे ये दोनों चीजें साथ ही लाये होते तो मेरी यह तरकीब सफल न हो पाती। मगर मालिकने मेरी लाज रख ली; मेरे साथी चले गये।

अपने साथियोंके जाते ही मैंने उस संगीनसे, जो गायको भोंकनेके लिये मियानसे निकाली गयी थी, उसके गलेमें बाँधी हुई पगड़ी काट डाली और उसकी पीठपर थपकी दी। पहले तो वह जोर लगानेपर भी नहीं उठ सकी। एक तो वह बुरी तरह थक गयी थी, दूसरे, मेरे कर्तव्यपर उसे विश्वास भी नहीं होता था। पर मेरे दुबारा पुचकारनेपर वह उठकर खड़ी हो गयी और अँगड़ाई लेकर दुमको बदनपर फिराया। फिर मेरी तरफ इस तरह देखने लगी जैसे कोई कह रहा हो कि 'तुम्हारे अहसानका बदला जरूर मिलेगा।' वह क्षणभरमें नजरोंसे ओझल हो गयी।

मेरे साथी आये और मैं दम साधे धरतीपर पड़ा था। उन्होंने मुझे हिलाया-डुलाया और गायके सम्बन्धमें पूछा। मैंने जवाब दिया—'भूखकी वजहसे मुझे मूर्च्छा आ गयी थी। गायका मुझे कोई पता नहीं।' मैं भूखा और उनकी टोलीका सरदार था, इस कारण मेरी बातका उन्हें विश्वास हो गया। झख मारकर उन लोगोंने आटेकी रोटी बनायी और वही खाकर पानी पिया गया। अब दूसरी बार गायकी तलाश करनेकी हिम्मत किसीमें नहीं थी।

गदर खतम होनेके बाद बलवा करनेवाले पकड़ लिये गये। उनमें मैं भी था। फौजी अदालतमें मुकदमा चला। मेरे लिये सिफारिशें की गयीं, पर उनका कोई असर नहीं हुआ। मुझे फाँसीकी सजा सुनायी गयी।

जेलके बाहर सैकड़ों आदमी खड़े थे। मुझे फाँसीके तख्तेपर खड़ा करके लाल टोपा पहना दिया गया। मेरी नजरोंके आगे दुनियामें चारों तरफ अँधेरा-ही-अँधेरा था। गलेमें फाँसीका फंदा डाल दिया गया। मुझे ऐसा लगा कि मेरे नीचेसे तख्ता हट गया और मैं खंदकमें गिर पड़ा। डरके मारे मेरा खून सूख गया और गला खुश्क हो गया। मैं बेहोश था, पर थोड़ी ही देरमें मुझे होश आया और ऐसा मालूम हुआ कि मैं मरा नहीं, अभीतक जीवित हूँ। मेरे दोनों पैरोंके नीचे दो सींग चुभ रहे थे, जिनपर मैं टिका था। खंदकके नीचे नहीं पड़ा। गलेका फंदा ढीला ही रहा।

कुछ देर बाद मुझे मुर्दा समझकर बाहर निकाला गया, पर मुझे देखते ही डाक्टर एक चीखके साथ पीछे हट गया। जब उसने मुझे बिलकुल सही-सलामत देखा तो उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। कोर्ट-मार्शलके हुक्मके मुताबिक मुझे तीन बार फाँसी दी गयी, मगर हर बार मेरे दोनों पैरोंके नीचे दो सींग लग जाते थे और मैं ऊँचा उठ जाता था। गलेका फंदा गला दबाकर मेरी जान नहीं निकाल पाता था। मैं बच जाया करता था। आखिर तंग आकर मुझे छोड़ दिया गया।

अपने सम्बन्धियोंके साथ मैं जेलसे बाहर निकला। उस समय मैंने देखा कि 'एक गाय
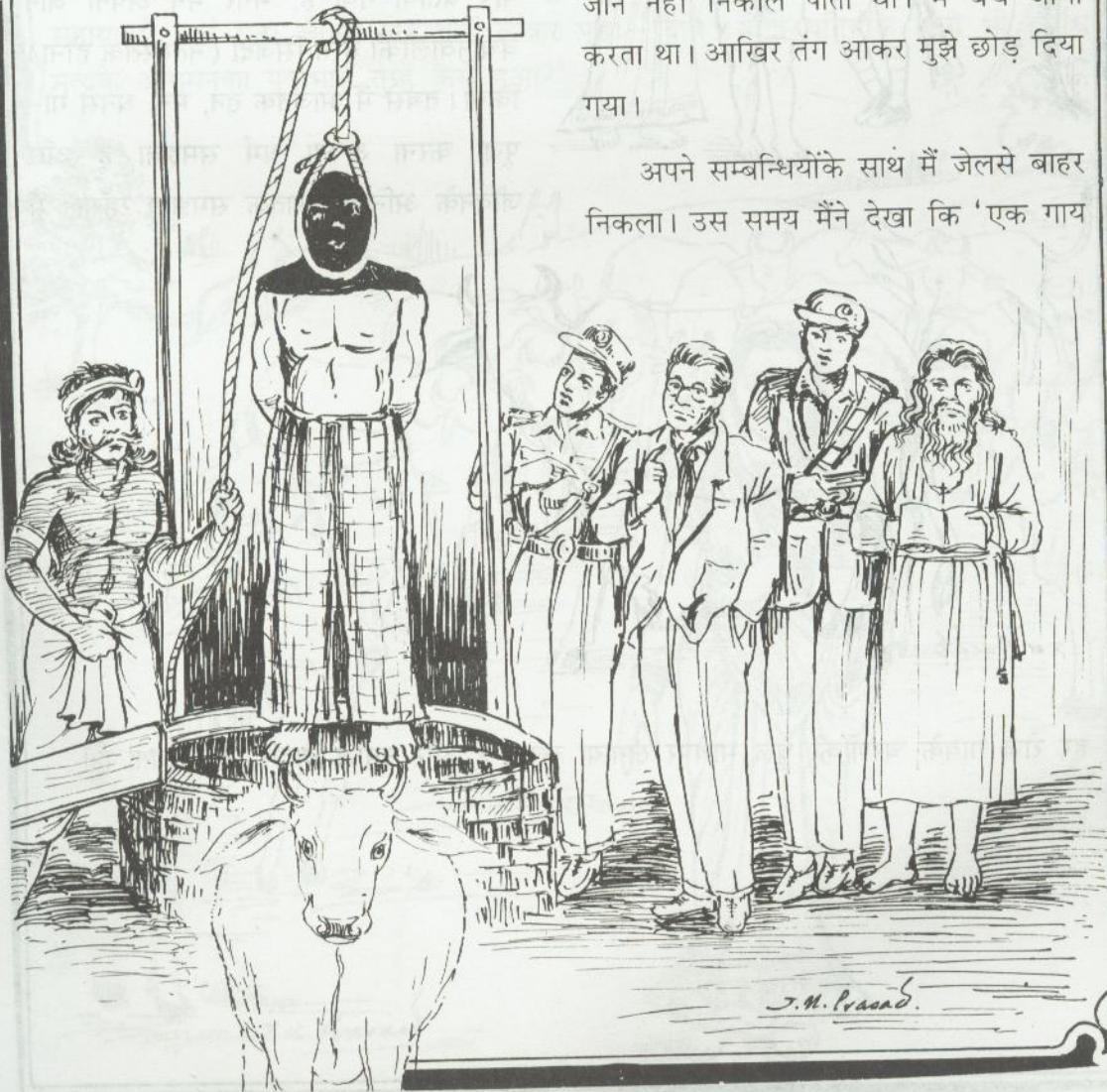
अपनी भोली आँखोंसे मेरी ओर देखती हुई मेरे आगेसे जा रही है और उसके पीछे उसका एक अल्हड़ बछड़ा खुशीसे उछलता हुआ जा रहा है।' मुझे उसी वक्त दिल्लीके गदरकी उस गायकी याद आ गयी, जिसे जबह करनेके लिये मेरे साथियोंने बाँध रखा था। छूटनेपर वह भी इसी तरह प्रेमभरी दृष्टिसे मेरी ओर देखती हुई गयी थी।

मेरे मजहबमें बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) को पाप बताया गया है, मगर मैंने अपनी जान बचानेवालीको तुरंत सिजदा (नतमस्तक होना) किया। तबसे मैं आजतक तन, मन, धनसे गो-पूजा करना अपना धर्म समझता हूँ और जीवनके अन्तिम क्षणतक समझता रहूँगा। मैं

हर रोज गायके चरणोंकी धूल माथेपर लगाया करता हूँ और नमाज बादमें पढ़ने जाता हूँ।

गोभक्तिका चमत्कार

(लेखक—श्रीरामेश्वरदयालजी श्रीमाली बी० ए०, साहित्यविशारद)

वर्तमानकालमें भौतिककताकी ओर प्रवृत्त मानव यद्यपि गो-सेवाकी महिमाको नहीं समझते, तथापि इधर जो अनुभव हुए हैं, उनके आधारपर गोके शरीरमें सभी देवताओंका निवास मानना पड़ता है।

आयुर्वेदप्रवीण वैद्यराज लक्ष्मणसिंहजीकी धर्मपत्नी श्रीमती गंगाकौरका देहावसान ५ अक्टूबर १९६० को हुआ। देहावसानके छ: मास पूर्व इन्होंने वैद्यराजजीको बता दिया कि यद्यपि शारीरिकरूपसे मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ, तथापि मेरा अन्तिम समय निकट है। वैसे तो वैद्यराजजी परम धार्मिक हैं, परंतु पत्नीकी इस बातपर वे पूर्ण विश्वास नहीं कर पाये।

मृत्युके दो मास पूर्व श्रीमती गंगाकौरने पुन: अपनी मृत्यु-तिथि बतलायी और स्वयं पूर्णत: हरिभक्ति और गो-सेवामें लग गयी। २३ सितम्बर ६० को किसी बातके प्रसङ्गमें यही बात फिर दोहरायी गयी। मृत्युके दो दिन पूर्वसे राम और ॐका पाठ चलता रहा।

निश्चित समयपर श्रीमती गंगाकौर चेतनाशून्य हो गयी। वैद्यजीने कस्तूरी आदि ओषधियोंकी सहायतासे उन्हें पुन: चैतन्य-अवस्थामें लाकर पूछा—'देवि! योगी-यतियोंके लिये भी दुर्बोध मृत्युके आगमनका पूर्वाभास तुम्हें कैसे हुआ?'

J. U. Prasad

श्रीमती गंगाकौरने उत्तर दिया—'यह सब गो-सेवाका प्रताप है। मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि मैं सीढ़ियोंपर जा रही हूँ। कुत्ते और कुत्तों-जैसे प्राणी मुझपर झपट रहे हैं और गो-समुदाय घेरा बनाकर मेरी रक्षा कर रहा है। एक प्राणी मुझे कह रहा है कि गायें तेरी रक्षा कर रही हैं, इसलिये तू जा और तेरे पतिकी शङ्का-निवारण कर आ।'

ऐसा कहकर उन्होंने आथणी (दही जमानेकी हाँड़ी) मँगवायी और वह सारा दही गोकी पुत्री (वत्सा) को खिलानेका आदेश दिया। फिर उन्होंने कहा कि मेरी माताजी आयेंगी और विकल होकर रोयेंगी। आप उन्हें रोने-कलपनेसे मना कर दीजिये और कहिये कि वे 'राम' या 'ॐ' नामका पाठ करें।

गायका दही खाते-खाते वे चिर-निद्रामें लीन हो गयीं।

गोभक्त लोटन

(श्रीरघुनाथसिंहजी राणा)

ब्रिटिश राज्य था। जाट लोटन दिल्लीके एक मोहल्ले पहाड़ी धीरजमें रहता था। सन् १९३५ ई० के लगभगकी बात है। ईदका उत्सव था। कुछ मुसलमानोंने उस समय गायकी कुर्बानी देनी चाही और वे एक सुन्दर ओसर (नवीन) गायको सजा-धजाकर कुर्बानी देनेके लिये गाजे-बाजेके साथ ले जा रहे थे। सभी हिन्दू इस दृश्यका किंकर्तव्यविमूढ़ होकर अवलोकन कर रहे थे। किसीसे कुछ करते नहीं बन रहा था। जैसे पाण्डवोंने द्रौपदीके चीरहरणको देखा और कुछ नहीं कर सके।

लोटन सामनेसे आ रहा था और जब उसने इस दृश्यको देखा तो उसका खून खौल उठा और वह कलियुगी भीम लोटन अपनेको रोक न सका तथा उसने मुसलमानोंपर धावा बोल दिया। कहते हैं कि लोटनने वह दृश्य उत्पन्न कर दिया जो द्रौपदीके साथ अभद्र व्यवहार करनेकी इच्छा रखनेवाले कीचक और उनके भाइयों तथा सेनाके साथ महाबली भीमने किया था। भीमके समान ही इन सबको अकेले लोटनने ही पछाड़ दिया। शेष गायको छोड़ नौ-दो ग्यारह हो गये। इस प्रकार गायकी रक्षा हुई। लोटन गायको अपने घर ले आया और उसने जीवन-पर्यन्त उसकी सेवा की।

गोसेवा

एक व्यक्तिने बहुत ही अल्प मूल्यपर पूर्वबंगालमें एक जूट-प्रेस खरीदा, जिसके सम्बन्धमें ऐसा प्रसिद्ध था कि जो भी व्यक्ति यह प्रेस लेगा, उसको कोई आर्थिक लाभ तो होगा ही नहीं, साथ ही उसको लेते ही कुछ अमङ्गल भी हो जायगा। बात भी सत्य थी। फिर भी, इतनी बड़ी सम्पत्ति अल्प मूल्यमें मिल रही है, जानकर उन्होंने प्रेस खरीद लिया। प्रेस लेनेके बाद कई प्रकारकी शारीरिक, आर्थिक विपत्तियाँ आयीं। जगन्नाथ-रथयात्रासे लौटकर जब स्वामीजी कलकत्ता पधारे और उनके यहाँ ठहरे तो उन्होंने स्वामीजीको उपर्युक्त सब बातें बतायीं और एक दिन स्वामीजीको प्रेस दिखानेके लिये भी उस स्थानपर ले गये। गङ्गातटपर सुरम्य स्थानपर विस्तृत जगहमें प्रेस देखकर स्वामीजीने कहा कि 'तुम्हारे ऊपर भगवान्‌की कृपा है, जो ऐसा स्थान अनायास ही प्राप्त हो गया है। अब इसको बेचनेका विचार छोड़कर ऐसा उपाय करो, जिससे इसका अमङ्गल दूर हो जाय। वह उपाय है—'गो-सेवा'। यहाँपर यथाशक्ति अच्छी गायें रखो। कुछ गायोंका दूध स्वयं अपने उपयोगमें न लाकर उनके बछड़ोंको ही पीने दो। प्रेमपूर्वक उनके चारा-दाना आदिकी सुव्यवस्था करो और स्थानके मध्यमें भगवान् श्रीगोपालकृष्णका

सुन्दर छोटा-सा मन्दिर बनवा दो। इस कारखानेके सभी अमङ्गल स्वयमेव दूर हो जायँगे।'

उन्होंने ऐसा ही किया। भगवत्कृपा और गोसेवासे जो कारखाना 'भूतहा-प्रेस' के नामसे प्रसिद्ध था, उसमें सुख-शान्ति और समृद्धिका निवास हो गया। पहले जो लोग उसमें काम करनेको तैयार नहीं थे, कहा करते थे कि उसकी मशीनोंको रात्रिमें भूत चलाते हैं; उसी स्थानपर गो-सेवाके प्रभावसे नयी-नयी मशीनें लगने लगीं और उस कारखानेके स्वामीको पर्याप्त लाभ मिलने लगा।

जब मालवीयजीने त्रिवेणीका जल लेकर गोरक्षाकी प्रतिज्ञा की

महामना पण्डित मदनमोहनजी मालवीय महाराज गोसेवाकी साकार प्रतिमा थे। जनवरी सन् १९२८ में प्रयागमें त्रिवेणीके पावन तटपर 'अखिल भारतवर्षीय सनातन धर्मसभा' का अधिवेशन था। व्याख्यान-वाचस्पति पं० दीनदयालजी शर्मा शास्त्री भी अधिवेशनमें महामनाके साथ उपस्थित थे।

महान् गोभक्त हासानन्दजी वर्मा गोहत्याके विरोधमें काला कपड़ा पहने तथा मुँहपर कालिख पोते हुए अधिवेशनमें उपस्थित हुए।

मालवीयजी महाराजको सम्बोधित कर गोभक्त हासानन्दजीने कहा—'गऊ माता भारत तथा हिन्दुत्वका मूल है। आप 'गोहत्या-बंदीके' लिये कोई ठोस योजना बनाइये।'

इसपर महामना बोल उठे—'हासानन्द! तुम मुखमें कालिख लगाकर फिर मेरे सामने आ गये। अरे गोहत्याके कारण केवल तुम्हारा मुँह ही काला नहीं हो रहा है, हम सब भारतवासियोंके मुखपर कालिख है। आओ, गोरक्षाके भीम! गङ्गाजलसे तुम्हारे मुखकी कालिमाको धो दूँ।' महामनाने त्रिवेणीके पावन जलसे गोभक्त हासानन्दजीके मुँहकी कालिख धो डाली तथा उसी समय त्रिवेणीका पावन गङ्गाजल हाथमें लेकर प्रतिज्ञा की 'हम जीवनभर गोरक्षा तथा गोसेवाके लिये प्रयासरत रहेंगे।'

इसी समय पण्डित दीनदयालजीने 'गो-सप्ताह' मनानेका प्रस्ताव रखा तथा 'अखिल भारतीय गोरक्षा-कोष' की स्थापनाकी घोषणा की गयी।

महामना मालवीयजी महाराजने सन् १९२८ में कलकत्तामें हुए कांग्रेसके अधिवेशनमें स्पष्ट कहा था—'गौ-माता भारतवर्षका प्राण है। उसकी हत्या धर्मप्राण भारतमें सहन नहीं की जानी चाहिये।'
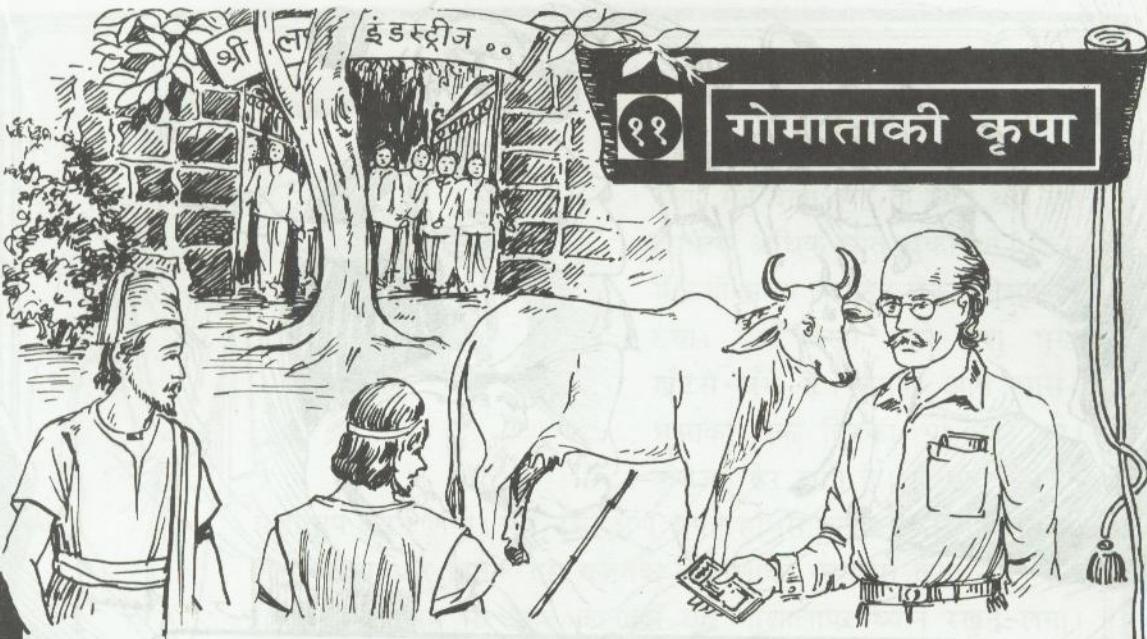
११ गोमाताकी कृपा

घटना हमारे यहाँ श्रीरामपूर मिलकी है। पाँच साल पूर्व हमने श्रीरामपूर (अहमदनगर) में श्रीलक्ष्मी इंडस्ट्रीजके नामसे श्रीरघुनाथदास धूतकम्पनीकी भागीदारीमें आयल मिल शुरू की। प्रारम्भमें दो सालतक कभी मशीनरी टूट गयी, कभी कुछ नुकसान हो गया—बड़ी तकलीफ रही। लाख कोशिश करनेपर भी हम सँभल नहीं सके।

एक दिन देखा गया—मिलके दरवाजेके सामने एक गाय पड़ी हुई है। कसाई उसे ले जानेके लिये बहुत प्रयत्न कर रहा है—मारपीट कर रहा है, तब भी गाय जरा भी हिलती नहीं। देखनेवालोंकी आँखोंमें आँसू आ गये। मिलके मजदूरोंने उपर्युक्त घटना देखकर मैनेजरको सूचना दी। मैनेजरने आकर कसाईके द्वारा छत्तीस रुपयेमें लायी हुई अच्छी हृष्ट-पुष्ट गौको पाँच रुपये मुनाफा—(कुल इकतालीस रुपये) देकर छुड़ा लिया। जो गौ कसाईके प्रयत्न करनेपर भी जरा भी नहीं हिलती थी। कसाईके छोड़ते ही वह सीधे मिलमें चली गयी।

तबसे वह गौ मिलमें ही पाली-पोसी जाने लगी। उस गौके मिलमें आनेके बादसे ही मिलकी हालत दिनोंदिन सुधरती गयी। जिस मिलके चलनेमें बराबर अड़चन आ रही थी, आज वही मिल गोमाताकी कृपासे बहुत अच्छी तरह चल रही है। वह तीन अच्छी नस्लके बछड़े दे चुकी है और प्रतिदिन पाँच लीटर दूध देती है। छोटा बच्चा भी उसके पास चला जाता है तो वह उसे जरा भी नहीं छूती। पर किसी दूसरे जानवरको कभी पास नहीं आने देती। भगवान्ने ऐसी कल्याणमयी गोमाताको मिलके दरवाजेपर पहुँचाया, इसके लिये हम उनके बड़े कृतज्ञ हैं।

मदनलाल बुब
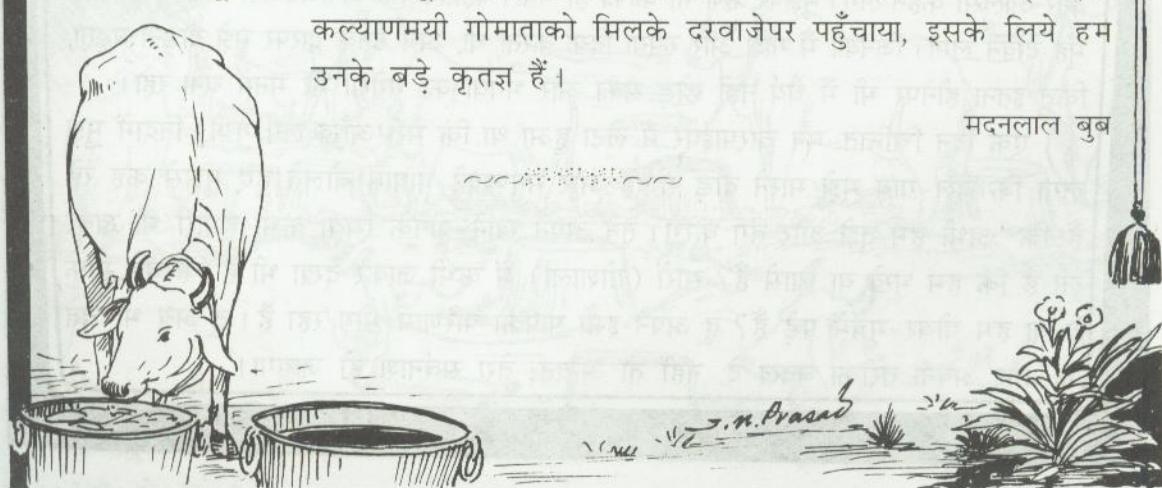
गोमाताकी सेवासे

(लेखक—एक गो-सेवक कृषक)

मेरे पूर्वज गाँवमें सदा सम्पन्न रहे, मेरे पिताजीका जीवन भी उन्नत रहा, वे चार-पाँच घण्टे ईश्वराराधनमें लगाते और शेष समय साहूकारी, गल्ला बीजके लिये देनेमें और खेतीके कार्यमें व्यतीत करते। इस कार्यमें उनका खूब मन लगता। उन्होंने भूमि भी पर्याप्त एकत्र कर ली थी। वे कृषि बहुत उत्तम तरीकेसे करते। गाँवके लोगोंपर उनका प्रभाव था और सब लोग उनसे सन्तुष्ट रहते थे। पिताजीके परलोकगमनके बाद गृहस्थीका सारा दायित्व मुझपर आ पड़ा। किंतु क्रमशः सम्पत्तिका ह्रास होने लगा। थोड़े ही समयमें मेरी सम्पत्ति आधी रह गयी। भूमिका कार्य स्थगित हो गया। बीजका गल्ला सब डूब गया। पैसेकी आय बंद हो गयी। खेतीसे अन्न कम होने लगा और अधिकांश जमीन परती पड़ गयी। देखते-देखते सारा काम चौपट हो गया।

मैं रात-दिन चिन्तित रहने लगा। भाग्यने जैसे मेरा साथ छोड़ दिया था। मैं जिस कार्यमें हाथ डालता, उसीमें असफल होता। मेरे दो और छोटे भाई हैं। उन लोगोंकी इच्छासे मुझे उनसे पृथक् होना पड़ा। सारी सम्पत्ति तीन भागोंमें बराबर-बराबर बाँटकर हम सब अपना-अपना कार्य चलाने लगे। मुझे चार वर्ष बीत गये, किंतु मेरी दशा उत्तरोत्तर अवनत होती गयी। गाँवके लोग मुझे निरुद्यमी और आलसी कहने लगे। मुझपर ऋण भी काफी हो गया। यहाँतक कि अनाजके लिये भी मैं दूसरोंका मुँह देखने लगा। जिनको मैं गल्ला और रुपया दिया करता था, अब उनके द्वारपर मुझे दौड़ना पड़ता, किंतु इतना होनेपर भी मैं धैर्य नहीं छोड़ सका और भगवान्‌का भरोसा मेरे मनमें बना रहा।

एक दिन चिन्तित-मन चारपाईपर मैं लेटा हुआ था कि मेरी आँख लग गयी। निद्रामें मुझे लगा कि बैल-गाय मुझे मारने दौड़ रहे हैं और मनुष्यकी भाषामें बोलते हुए मुझसे कह रहे हैं कि 'अभी हम तुझे और तंग करेंगे। तूने अपने खाने-पीनेके सिवा कभी हमारी भी खबर ली है कि हम भूखे या प्यासे हैं? सारों (गोशाला) में कभी जाकर देखा भी है कि वह साफ है या हम गोबर-मूत्रमें पड़े हैं? तू अपने इसी पापका परिणाम भोग रहा है। तू अब भी चेत जा और अपना तरीका बदल दे, नहीं तो अन्ततः तेरा सर्वनाश हो जायगा।'
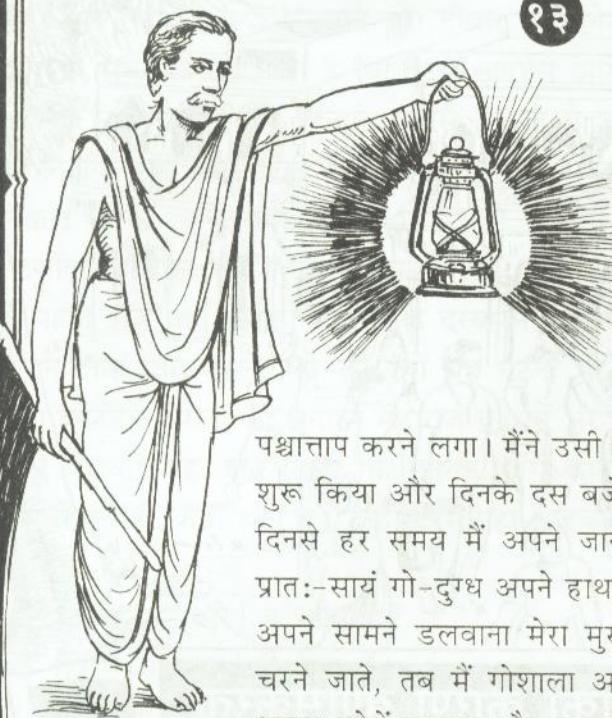
१३ गाय-बैलोंके वचन सुनकर मुझे बहुत व्यथा हुई और मैं चौंककर जाग उठा। मैंने देखा, यह तो स्वप्न था। रात आधीसे अधिक बीत चुकी थी। किंतु मैं उसी समय लालटेन लेकर गोशालामें गया। वहाँ देखा, सारे पशु भूखे खूँटेसे बँधे हैं। उनके आगे घास-भूसाका एक तिनका भी नहीं था। कूड़का ढेर लगा है। मैं मन-ही-मन पश्चात्ताप करने लगा। मैंने उसी क्षण अपने हाथसे गोशालाको साफ करना शुरू किया और दिनके दस बजेतक गोशालाकी सफाईमें लगा रहा। उस दिनसे हर समय मैं अपने जानवरों एवं गोशालापर ध्यान रखने लगा। प्रात:-सायं गो-दुग्ध अपने हाथसे दुहना और चारा-घास एवं स्वच्छ जल अपने सामने डलवाना मेरा मुख्य कर्तव्य हो गया। मेरे गाय-बैल जब चरने जाते, तब मैं गोशाला अपने हाथोंसे साफ करता। कूड़ा-करकट अलग गड्ढेमें डालता और उसकी अच्छी खाद बनती। जानवर सुखपूर्वक रहने लगे। मेरे जानवर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट हो गये। घृत-दुग्ध पर्याप्त मिलने लगा। बैलोंके सुस्वास्थ्यके कारण मेरी कृषि चमक उठी और अनाज पाँच गुना-छ: गुना उत्पन्न होने लगा। खेतीमें मेरी रुचि बढ़ गयी और निराशा दूर हो गयी। ऋण भी अधिकांश चुका दिया गया। मेरी स्थितिमें काफी परिवर्तन हो गया। मुझे निरुद्यमी, आलसी और अभागे कहनेवाले लोग अब मेरी प्रशंसा करने लगे।

यह घटना बिलकुल सच्ची है। रईसीके चक्करमें मैं अपनी सम्पत्तिका नाश कर चुका था, किंतु आज ईश्वरकी कृपा, गो-माताकी आशिष और अपने हाथों काम करनेके कारणसे मेरी दशा अत्यन्त सुन्दर हो गयी। यदि कोई गोपालक कृषक भाई मेरी तरह दरिद्रनारायणके शिकार हो गये हों तो उन्हें मेरे पथका अनुसरण करना चाहिये। मैं डंकेकी चोट कहता हूँ कि भगवान्‌पर विश्वास और गोमाताकी सेवासे बुरी-से-बुरी हालत बदलकर अच्छी हो जायगी।
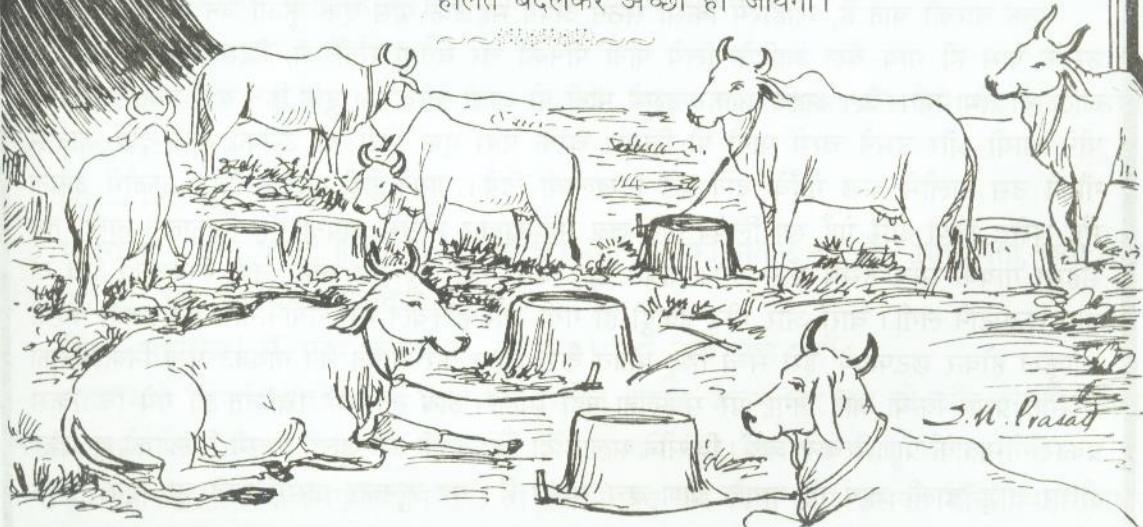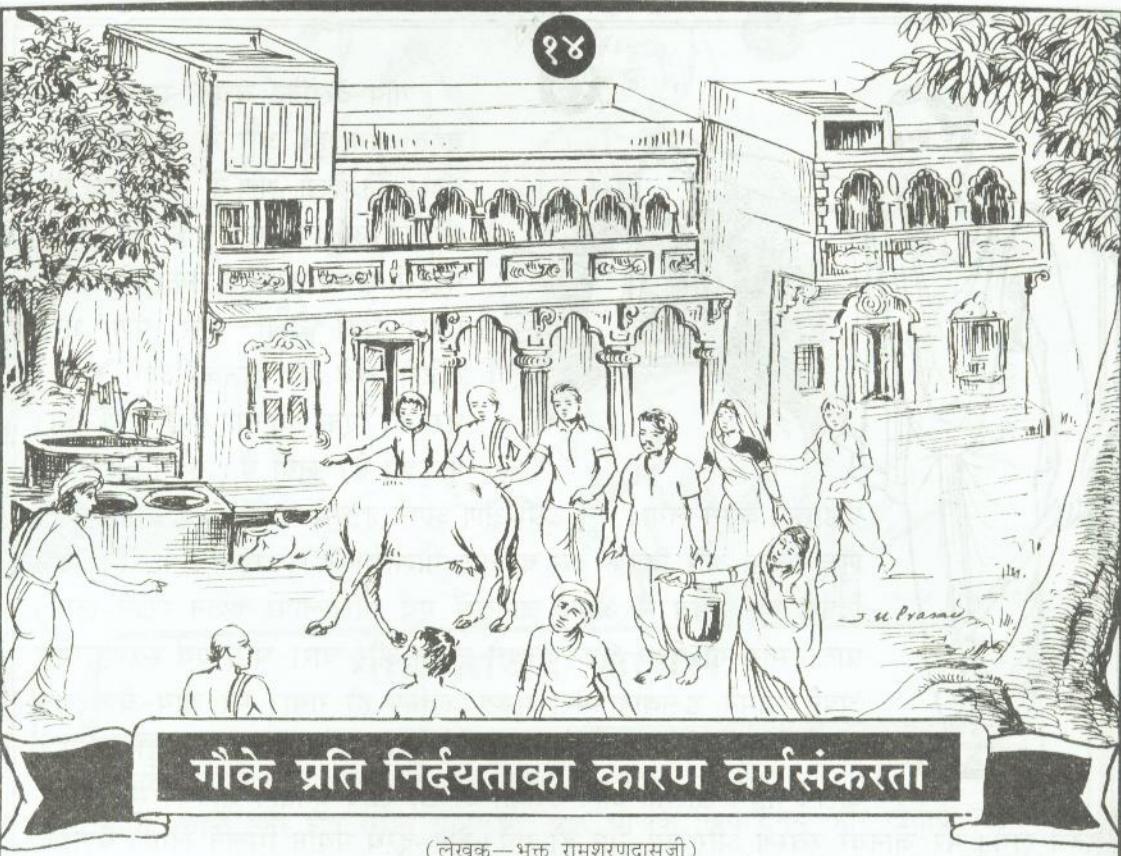
गौके प्रति निर्दयताका कारण वर्णसंकरता

(लेखक—भक्त रामशरणदासजी)

पंजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंहका एक जीवन-प्रसङ्ग

[एक ऐतिहासिक सत्य घटना]

पंजाबकेसरी महाराजा रणजीतसिंहके समयकी एक सत्य घटना यहाँ दी जाती है, जिससे सिद्ध होता है कि वर्ण-व्यवस्थाको न माननेके कारण ही आज बहुत-से लोग हिंदू होते हुए भी गोमाताके शत्रु बने हुए हैं और गो-हत्या बंद होनेमें रुकावट डाल रहे हैं।

यह उस समयकी बात है, जिस समय पंजाबमें महान् तेजस्वी गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक महाराजा रणजीतसिंहजीका राज्य था और वे लाहौरमें रहते थे। महाराजा महामाया भगवती श्रीदुर्गाजीके उपासक और गो-ब्राह्मणोंके परम भक्त थे। गो-ब्राह्मण निर्भय विचरें, इसीको वे अपने राज्यकी सबसे बड़ी विशेषता मानते थे।

एक बारकी बात है, लाहौरमें किसी सेठने अपने महलके पास एक कुआँ बनवा रखा था और उसके पास ही गाय-बैल आदिके लिये पानी पीनेको चर बनवा रखी थी, जिसमें पानी भर दिया जाता था तथा गाय-बैल आदि आकर उसमें पानी पी जाया करते थे। एक दिन वहाँ एक गाय पानी पीने आयी और उसने चरमें पानी पी लिया। चरके पास एक मोरी थी उसकी ओर दृष्टि जानेपर गौको उस नालीमें कुछ गेहूँके दाने पड़े दिखलायी दिये। गायने गेहूँ खानेके लिये नालीमें अपना मुँह घुसेड़ दिया और गेहूँ खा लिये। गाय जब गेहूँ खाकर मोरीसे अपना मुँह निकालने लगी, तब सहसा गायके सींग उसमें फँस गये। गायने खूब जोर मारा; पर मुँह बाहर नहीं निकला। अब तो गाय छटपटाने लगी। चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गयी और हलचल मच गयी। गाय इस प्रकार कष्टसे व्याकुल होकर छटपटाये, इसे सच्चे हिंदू मानव कैसे सहन कर सकते थे। गायका मुख निकालनेका भरसक प्रयत्न किया जाने लगा, पर सफलता नहीं मिली। अब तो सभी चिन्तित हो गये कि किस प्रकार गोमाताके प्राण बचाये जायँ। किसीने सलाह दी कि जल्दी-से-जल्दी किसी मिस्त्रीको बुलाकर दीवार तोड़ डाली जाय तो गायके प्राण बच सकते हैं। यह सुनकर पासमें खड़े हुए एक हिंदूने

कि 'नहीं! दीवार क्यों तुड़वाते हो, दीवार तुड़वानेसे मकान-मालिकको बड़ा नुकसान पहुँचेगा। इसलिये सबसे अच्छा यही है कि किसी बढ़ईसे आरी माँगकर उससे गायके सींग काट डाले जायँ तो मुँह निकल आयगा।' हिन्दूके मुखसे निकले ये शब्द सभीको बुरे लगे। आखिर दीवार तुड़वाना ही निश्चय हुआ और जल्दी-से-जल्दी मिस्त्रीको बुलाकर दीवार तोड़ डाली गयी। गाय सकुशल निकल आयी, बच गयी। इससे हिन्दुओंमें एकदम प्रसन्नताकी लहर दौड़ गयी। वहाँ महाराजा रणजीतसिंहजीका एक गुप्तचर सिपाही खड़ा था। उसने भी यह सब दृश्य अपनी आँखोंसे देखा। संध्याको जब वह सिपाही महाराजके दरबारमें उपस्थित हुआ और शहरकी प्रमुख बातें महाराजको सुनाने लगा, तब उसने ज्यों-की-त्यों यह घटना भी सुनायी। किसी हिंदूके द्वारा किये गये गायके सींग काटनेके प्रस्तावको सुनकर महाराज क्रोधमें भर गये और उन्होंने सिपाहीसे कई तरहसे उलटे-सीधे पूछकर यह जान लिया कि गायके सींग काटनेकी बात वास्तवमें कही गयी थी और वह एक हिंदूने ही कही थी। तब उन्होंने सिपाही भेजकर उसको बुलवा लिया और इस प्रकार दोनोंमें प्रश्नोत्तर हुए—

महाराजा—अरे! तू कौन है?

हिंदू—महाराज! मैं हिंदू हूँ।

महाराजा—तैंने गायमाताके प्रति क्या गंदे शब्द कहे थे, सत्य बताना?

हिंदू—महाराज! क्षमा करें, मेरे मुखसे ये गंदे शब्द निकल गये थे कि दीवार तोड़नेके बदले गायके सींगोंपर आरी चलाकर उन्हें काट दो।

महाराजा—तैंने हिंदू होकर यह पापभरी बात कैसे कही?

हिंदू—महाराज! अपराध हो गया। क्षमा करें।

महाराजा—एक हिंदू-मानवके मुखसे गायमाताके सींगोंपर अपने हाथोंसे आरी चलानेकी बात तेरे मुखसे कैसे निकली? सच बता।

हिंदू—महाराज! भूलसे निकल गयी।

महाराजा—क्यों निकली?

हिंदू—महाराज! पता नहीं।

महाराजा—मालूम होता है तू हिंदू-मानवकी संतान नहीं है।

हिंदू—नहीं महाराज! मैं हिंदू हूँ।

महाराजा—अरे! तू हिंदू नहीं है, हिंदू-मानवके मुखसे गायमाताके प्रति ऐसे गंदे शब्द कभी नहीं निकल सकते?

हिंदू—महाराज! निकल गये।

महाराजा—जान पड़ता है कि तू असली हिंदू-माँ-बापकी संतान नहीं है? सत्य बता, क्या बात है। नहीं तो, तुझे जेलमें डाल दिया जायगा।

हिंदू—महाराज! मैं सत्य कहता हूँ, महाराज! मुझे कुछ पता नहीं।

महाराजाने सिपाहियोंको हुक्म दिया कि इसे ले जाकर जेलमें बंद कर दो और इसकी माँको लाओ। महाराजा चिन्तामें पड़ गये कि हाय, मेरे राज्यमें ऐसे नालायक हिंदू भी रहते हैं।

हुक्मकी देर थी कि सिपाहियोंने उसे तो जेलमें बंद कर दिया और उसकी माँको महाराजाके सामने लाकर उपस्थित कर दिया। महाराजाने उसे सामने खड़ी देखकर पूछा—
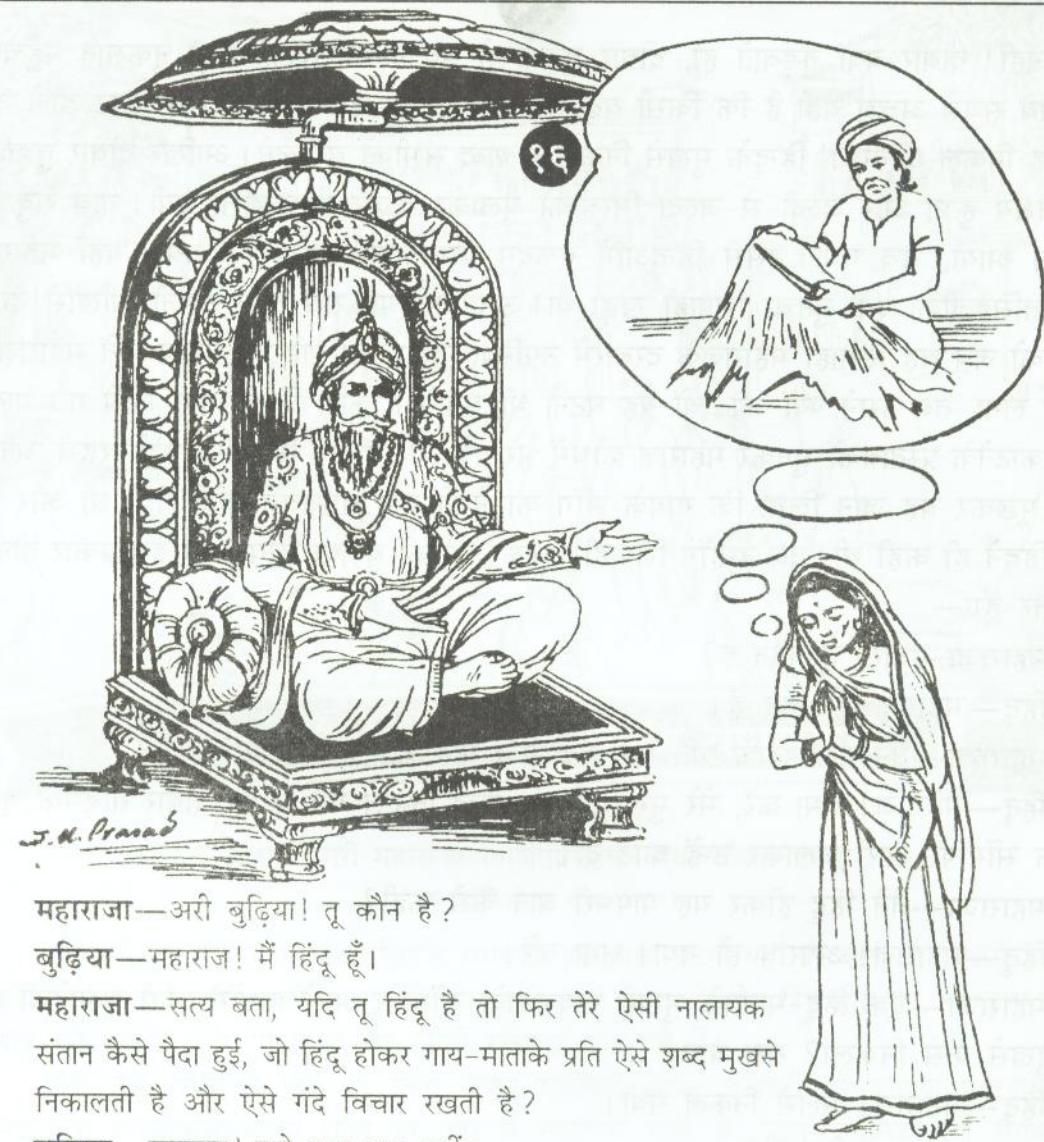
महाराजा—अरी बुढ़िया! तू कौन है?

बुढ़िया—महाराज! मैं हिंदू हूँ।

महाराजा—सत्य बता, यदि तू हिंदू है तो फिर तेरे ऐसी नालायक संतान कैसे पैदा हुई, जो हिंदू होकर गाय-माताके प्रति ऐसे शब्द मुखसे निकालती है और ऐसे गंदे विचार रखती है?

बुढ़िया—महाराज! मुझे कुछ पता नहीं।

महाराजा—यह तेरे मानवसे दानव-संतान कैसे पैदा हुई? तैने किससे सङ्ग किया था, सत्य बता?

बुढ़िया—महाराज! मैंने किसीसे सङ्ग नहीं किया।

महाराजा—नहीं, यह तेरी हिंदू-पतिकी संतान नहीं है।

बुढ़िया—नहीं महाराज! ऐसा कभी नहीं हुआ।

महाराजा—फिर ऐसी संतान कैसे पैदा हुई?

बुढ़िया—कुछ पता नहीं।

इसपर महाराजाने उसे डाँटकर उसके पुत्रको मार देनेका भय दिखलाया और उसे जीवनभर जेलमें डालनेकी धमकी दी। तब बुढ़िया घबरा गयी और थर-थर काँपने लगी तथा सत्य बात कहनेके लिये तैयार हो गयी। उसने कहा—

बुढ़िया—महाराज! क्षमा करना। असली बात यह है कि मैं पतिव्रता हूँ, मैंने कभी भी किसी दूसरे पुरुषका भूलकर भी सङ्ग नहीं किया। मेरे मकानके बराबर एक ऐसे व्यक्तिका मकान था जो छूरीसे मुर्दे पशुओंकी खाल उतारा करता था। अवश्य ही जिस रात्रिको अपने पतिद्वारा मेरे गर्भ रहा, उसी

रात्रिके बाद प्रात:काल होनेपर वह अपने मकानकी छतपर बैठा हुआ था। सबसे पहले मेरी दृष्टि उसी व्यक्तिपर पड़ी। इसीसे मेरी यह नालायक संतान हुई, कोई दूसरा कारण नहीं है।

महाराजा—ठीक है। कुछ व्यक्तियोंका काम मुर्दे पशुओंके अङ्ग काटना, चमड़ा उधेड़ना है। उसीका प्रभाव इस तेरे पुत्रके ऊपर पड़ा और उसमें निर्दयताके संस्कार इसमें आ गये। अच्छा जा, तुझे और तेरे पुत्रको अब छोड़े देता हूँ। अबसे ऐसी गलती कभी न करना। तदनन्तर महाराजाने अपने सारे राज्यमें घोषणा करा दी कि 'प्रत्येक हिंदू-स्त्रीको यह चाहिये कि वह अपने हाथके अँगूठेमें सोनेकी अथवा चाँदीकी—जैसी जिससे बन सके, आरसी बनवाकर पहना करे और उस आरसीमें शीशा लगवाये तथा प्रात:काल उठते ही सबसे पहिले अपने अँगूठेकी आरसीके शीशेमें अपना मुँह देख लिया करे, जिससे उसके कोई नालायक संतान न पैदा हो।'

महाराजाकी आज्ञाकी देर थी कि सभी हिंदू-घरोंमें आरसी तैयार कराकर पहनी गयी, तो आजतक हजारों-लाखों घरोंमें पहनी जा रही है। महाराजा रणजीतसिंहजी कितने दूरदर्शी थे तथा मानवताके सच्चे रक्षक थे—यह इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। आज जो वर्ण-व्यवस्थाका खुले रूपमें विध्वंस किया जा रहा है, वर्णसंकरता फैलायी जा रही है, सर्वत्र गोहत्या-विरोधी कानून बननेमें बाधा दी जा रही है और सारे देशमें अंडे, मांस-मछली खानेका जोर-शोरसे प्रचार हो रहा है—यह वर्णाश्रम-धर्मके अनुसार न चलनेका ही महान् भयंकर दुष्परिणाम है। जिसके अंदर तनिक भी मानवता है, वह कभी गोमाताका, धर्मका विरोधी हो ही नहीं सकता।

गोसेवासे यमयातना छूट गयी

(लेखक—श्रीभिक्षु गौरीशंकरजी)

एक मनुष्यने जीवनभर पाप ही किये थे। एक दिन उसने रास्तेमें जाते देखा कि एक घायल गाय पड़ी है और उसके शरीरमें सड़ा घाव है, दुर्गन्ध आ रही है और कीड़े पड़ गये हैं। उसे गायपर दया आ गयी। उसने एक अँगुलीसे गायके कीड़े निकाले और उसी अँगुलीसे रोज घावपर मलहम लगाने लगा। धीरे-धीरे घाव मिट गया। दुर्गन्ध जाती रही। गाय स्वस्थ होकर चलने-फिरने लगी। मरनेके बाद उस मनुष्यको यमपुरीमें ले जाया गया। वह अपने दुष्कर्मोंका स्मरण करके दुःखी हो रहा था और भूख-प्याससे पीड़ित था। यमराजने पता लगाया तो उसके जीवनमें सब पाप-ही-पाप थे। एक सत्कर्म था अँगुलीसे गायके कीड़े निकाले थे और घावपर दवा लगायी थी। यमराजने सन्तुष्ट होकर अँगुली चूसनेको कहा। आदेश पाते ही उसने मुँहमें अँगुली लेकर चूसना शुरू किया। अँगुलीसे रसभरी अमृतमयी दुग्ध-धारा निकली और वह उसका पान करके क्षुधा-पिपासाकी पीड़ाके साथ ही तमाम पापोंसे मुक्त हो गया।

गोमाताका अपमान करना मानवता नहीं, दानवता है

[काश्मीरनरेश महाराज श्रीप्रतापसिंहजीके जीवनकी एक सच्ची घटना]

(लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी)

स्वर्गीय काश्मीरनरेश महाराज श्रीप्रतापसिंहजी बड़े ही धर्मात्मा, गो-ब्राह्मण-प्रतिपालक राजा थे। आप कट्टर सनातनधर्मी, वेद-शास्त्रोंके ज्ञाता, जितेन्द्रिय, धर्मात्मा और प्रजापालक थे। सैकड़ों ब्राह्मण नित्य आपके यहाँ वेदध्वनि, चण्डीपाठ, जप-अनुष्ठान आदि किया करते थे और क्या मजाल जो राज्यमें कोई गोहत्या कर सके और गोमाताकी ओर अँगुली उठाकर भी देख सके।

एक बार परम प्रतापी काश्मीरनरेश महाराज श्रीप्रतापसिंहजी कहीं जा रहे थे और साथमें बड़े-बड़े अधिकारी भी थे। किसीने देखा—रास्तेमें आगे एक गाय बैठी है। तुरंत कुछ कर्मचारी आगे बढ़े और उन्होंने गायको उठाकर खड़ी कर दिया एवं रास्तेसे हटा दिया। कर्मचारियोंके इस प्रकार दौड़-धूप करनेके कारण महाराजका ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ और महाराजने एक कर्मचारीको पास बुलाकर पूछा कि 'इस प्रकार एकदम दौड़-धूप करनेका कारण क्या था?' आपको बताया गया कि 'महाराज! आपकी सवारी जिस रास्ते जाती, वह रास्ता साफ नहीं था, उसमें एक गाय रास्ता रोके बैठी थी। अब उस गायको हटाकर रास्ता साफ कर दिया गया है।'

महाराज प्रतापसिंहने जब यह सुना कि मेरे कारण गायको कष्ट पहुँचाया गया है, तब उनको बहुत ही दुःख हुआ। महाराजने क्षोभसे वहीं सवारी रुकवा दी। तुरंत गायको रास्तेमेंसे हटानेवाले कर्मचारियोंको बुलाकर उन्हें बड़ा ही उलाहना देते हुए कहा—

'तुमलोगोंने यह क्या घोर अनर्थ कर डाला? क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि हम भारतके क्षत्रिय राजाओंके जीवनका एकमात्र उद्देश्य गौ-ब्राह्मणोंकी रक्षा करना है और गौ-ब्राह्मणोंकी रक्षा तथा सेवा करना ही मानवता है। तुमने मुझ क्षत्रिय राजाके लिये परम पूजनीय गोमाताको उठाकर उसे कष्ट पहुँचाया तथा गोमाताका अपमान किया, यह मानवता नहीं दानवता है। भविष्यमें ऐसा कभी मत करना। यदि कोई ऐसा करेगा, उसे तुरंत नौकरीसे अलग कर दिया जायगा।' महाराजकी इस प्रकार अद्भुत गोभक्ति और मानवता देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये और जय-जयकार पुकार उठे।
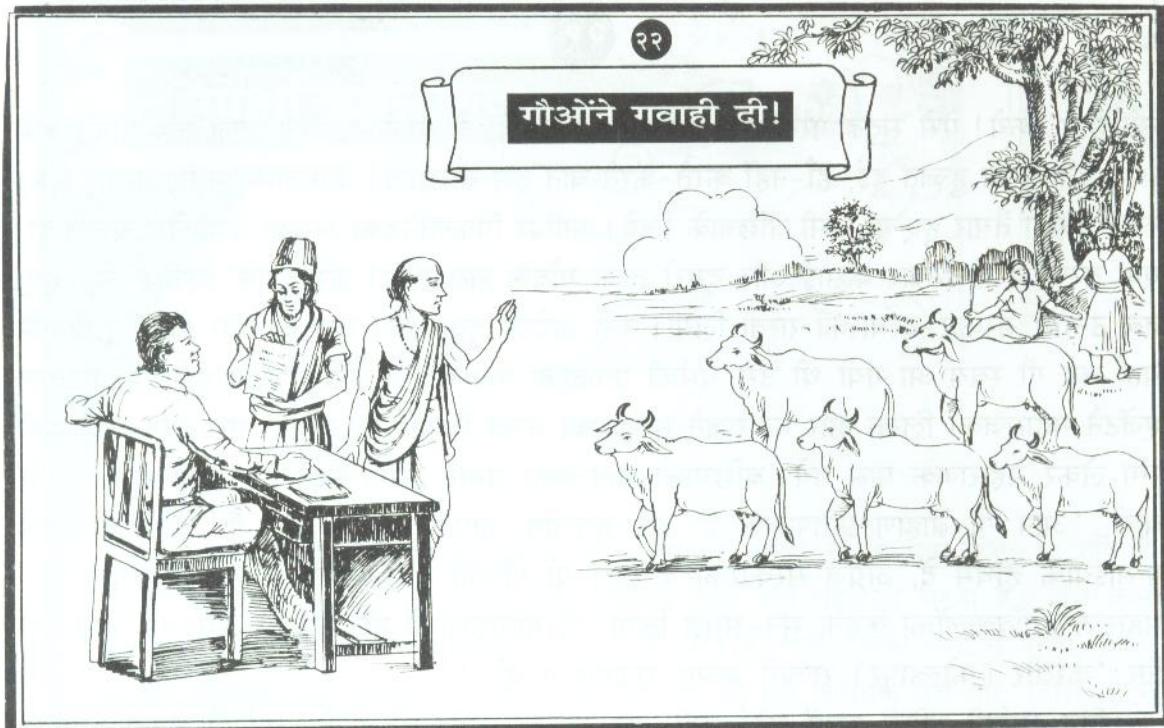
गौओंने गवाही दी!

जो बोल नहीं सकती, वह गवाही कैसे दे सकती है? पर श्रद्धा-भक्तिके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। जड-पाषाणकी मूर्ति यदि भोग पा सकती है तो विश्वजननी गोमाता अपने भक्तकी ओरसे गवाही क्यों नहीं दे सकती? तहसीलदारने जब पूछा कि आपकी तरफसे कौन गवाह हैं तो गोविन्ददासजीने गौओंकी तरफ अँगुलीसे इशारा किया। तहसीलदारने कहा, 'आप गौओंकी तरफ इशारा करते हैं, पर ये गौएँ आपकी हैं, इसका सबूत क्या है?' गोविन्ददासजीने उत्तर दिया, 'सबूत? जगत्की सब गौएँ हम तपस्वी ब्राह्मणोंकी हैं। आप चाहें तो शास्त्रोंको देख सकते हैं।' तहसीलदारने कहा, 'यह सबूत तो द्वापरयुगका है, आज इससे कोई मतलब नहीं हासिल हो सकता। ये गौएँ आपकी हैं तो कोई रसीद-पुरजा या और कोई कागज आपके पास ऐसा हैं जो आप सबूतमें दाखिल कर सकें?' गोविन्ददासजीने कहा, 'कागज-वागज मेरे पास कुछ नहीं है। ये गोमाताएँ ही मेरी गवाह हैं। मैं इन्हें बुलाता हूँ, ये यदि मेरे पास आ जायँ और अपना प्यार दिखा दें तो आप मानेंगे या नहीं?'

तहसीलदार तथा प्रतिपक्षी लोग जब राजी हुए तब गोविन्ददासजीने गौओंको पुकारा, 'गङ्गा, गोदा, यमुना, कृष्णा, सावित्री, मेरी माता, आओ, आओ, मेरी माता, आओ!' इस तरह पुकारते हुए ज्यों ही उन्होंने उन गौओंको अपने पास आनेके लिये हाथसे इशारा किया, त्यों ही सब गौएँ अपने बन्धन तुड़ाकर उनके पास दौड़ी गयीं और उनका बदन चाटने लगीं। सब लोग और कसाई भी देखकर दंग रह गये और गौएँ गोविन्ददासजीके पीछे-पीछे मठके अंदर अपने गोठोंमें आ गयीं। बेलवड़के बाजारकी तरफ तबसे गोविन्ददासजीकी विशेष दृष्टि हो गयी।

'हा मेरी कपिली!'

आश्विन कृष्ण १० शाके १८३९ (ता० १०-१०-१७) का दिन था। गोविन्ददासजी खोयी हुई गौओंको देखने बेलवड़ बाजारमें पहुँचे। देखते-देखते एक गौके सामने ठहर गये और समीप ही खड़े कुछ गोसेवकोंसे कहने लगे, 'देखो, यही तो मेरी कपिली (कपिला) है। अब कैसे क्या हो? इस तरह कितनी गौएँ लापता हो जाती होंगी। कोई सुध लेनेवाला नहीं रहा। यह देखो, मेरी धौरी! वह वहाँ मेरी कबरी भी है! हरे! हरे! भगवन्! आप कबतक मेरी परीक्षा करेंगे? इतने हिंदुओंके जीवित रहते गौओंकी गर्दनोंपर छुरी चले? ये क्या हिंदू हैं? पर मैं इन्हें क्या कहूँ? मैं स्वयं क्या हूँ? मैं हिंदू, हिंदुओंमें भी ब्राह्मण हूँ! मेरे देखते यह सब हो रहा है और मैं जी रहा हूँ! धिक्कार है ऐसे जीनेको! गोपालकृष्ण! अब इस जीवनको समाप्त करनेमें क्यों देर लगा रहे हो? हा! मेरी कपिली!' ऐसे ही दु:खोद्गार उनके मुखसे निकल रहे थे और वे इधर-से-उधर चक्कर लगा रहे थे। सैकड़ों बार उन्होंने कपिलाका नाम लिया। जो लोग वहाँ जमा थे वे कोई भी अब उन्हें नहीं दिखायी देते थे। उनके सामने सब ओर कपिली, धौरी, कबरीकी ही मूर्तियाँ खड़ी थीं। उनकी दृष्टि उन्हींकी ओर लग गयी। उनकी देह जड हो गयी, एक जगह स्थिर हो गये, एक बार आकाशकी ओर देखा और फिर अपनी गौओंकी ओर देखा, हाथ जोड़कर प्रणाम किया, उपस्थित गोसेवकोंको प्रणाम किया। भगवान् गोपालकृष्णको एक बार पुकारा और 'हा! मेरी कपिली' कहते हुए धड़ामसे धरतीपर गिर पड़े। यह देखकर लोग इधर-उधर भागने लगे और आठ-दस गौएँ बन्धन तुड़ाकर उनके पास आ गयीं और उनका बदन चाटने लगीं। पर वे अब कहाँ थे? गौ और गोपालका ध्यान करते हुए वे इहलोकसे चले गये। सिरंबा गाँवमें गोविन्ददासजीका अन्त्यसंस्कार हुआ और बेलवड़में उनका स्मारक-मन्दिर बना है।

(३)

सन् १८९६ में महाराष्ट्र और कर्णाटकमें भयङ्कर अकाल पड़ा। गरीब-गुरबा और गाय-बैल तथा अन्य पशु भूखों मरने लगे। बीजापुरकी तरफके 'लमाण' जातिके कुछ लोग पेट भरनेके लिये कोल्हापुर-राज्यके चिंचली गाँवमें आकर रहने लगे। उनके साथ बहुत-से गाय-बैल भी थे। ये लोग नाममात्र मूल्य लेकर अपनी गौओं और बैलोंको बेचने लगे। कसाइयोंके लिये तो यह मौका
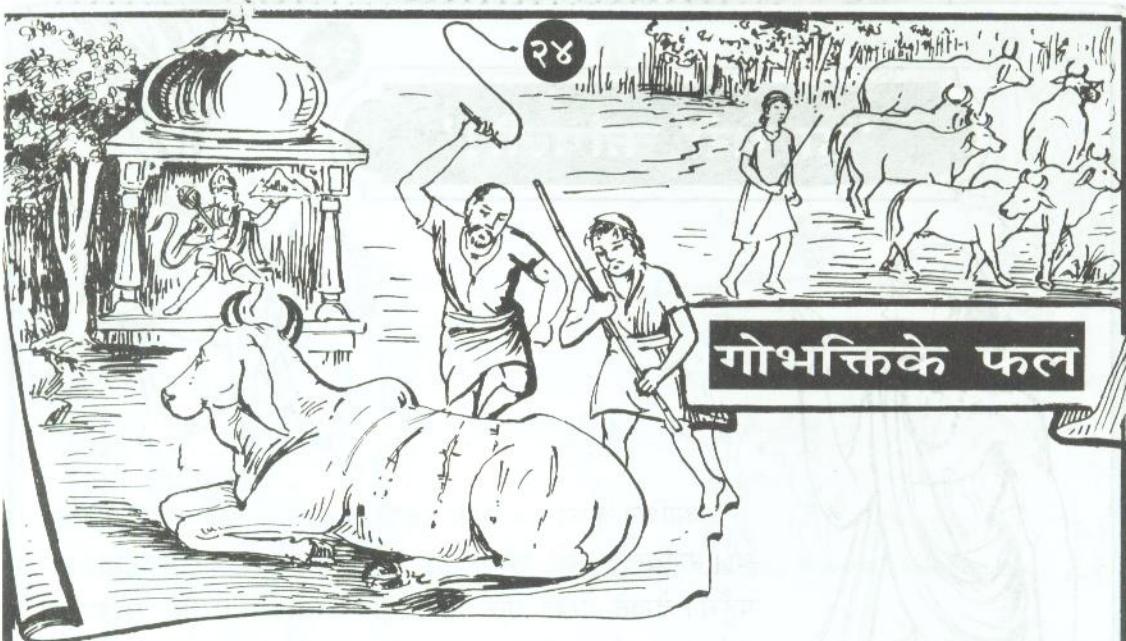
ही था। चार आनेसे लेकर बारह आनेतकमें गाय-बैल बिके और कसाई उन्हें डंडे मारते हुए ले जाने लगे।

गाय-बैल एक तो भूखे थे, दूसरे उनपर डंडोंकी मार पड़ने लगी। उनसे एक पग भी चला नहीं जाता था। रास्तेमें हनुमान्‌जीका एक मन्दिर मिला। इन गाय-बैलोंमेंसे एक गौ शायद हनुमान्‌जीको अपना रक्षक जान झुंडमेंसे निकलकर हनुमान्‌जीके सामने जाकर बैठ गयी। कसाइयोंने उसे मार-मारकर उठाना चाहा; पर वह नहीं उठी। उसपर इतनी मार पड़ी कि साठ-सत्तर जखम हो गये और उनमेंसे रक्त बहने लगा, नेत्रोंसे आँसुओंकी धारा चल ही रही थी। अतिदीन होकर वह चारों ओर ताक रही थी कि कोई माईका लाल आकर छुड़ायेगा। गाँवके एक रईस सुलतान बालगौड़ा पाटिल वहाँ आये तो उनसे यह हाल देखा न गया। उन्होंने कसाइयोंको बहुत समझाया, पर उनके निर्दय हृदय न पसीजे। तब पाटिल गाँवके लोगोंको बुला लाये। गाँवके लोगोंने सब गौओंको असली खरीदसे अधिक मूल्य देकर छुड़ा लिया। पर उस बैठी हुई गौको खरीदनेके लिये कोई तैयार न हुआ। तब पाटिलने स्वयं उसे बारह आनेमें खरीद लिया।

'गोमाता! अब उठो' पाटिलके यह कहते ही वह उठकर खड़ी हो गयी। सब लोग आश्चर्य

करने लगे। आठ-दस दिन दवा-दारू करनेपर वह गौ अच्छी हो गयी। जिस दिन वह गौ पाटिलके यहाँ आयी, उस दिनसे पाटिलका भाग्य खुला, उनके घर लक्ष्मी रमने लगीं।

पाटिलकी यह विभववृद्धि कुछ ईर्ष्यालु प्रकृतिके लोगोंसे न सही गयी। एक वर्षके अंदर ही 'गौ चोरी की है' इस अभियोगपर पाटिलके नाम गिरफ्तारीका वारंट निकला। घरके सब लोग रोने लगे; गौ भी रँभाने लगी। पर पाटिल कुछ नहीं बोले। गौ जब्त की गयी, पर उसे ले जानेका किसीको साहस नहीं हुआ; क्योंकि वह गुस्सेसे भरी हुई, सींग आगेको किये हुए बड़ी तीखी दृष्टिसे देख रही थी। ऐसा मालूम होता था कि दस-बीस आदमी भी उसे पकड़नेके लिये एक साथ उसके पास जाते तो वह सबको लिटा देती। पर इसके आगे और भी तो उपाय उनके लिये थे ही। वे गौको डंडोंसे मारने लगे। पाटिलसे यह नहीं सहा गया और उन्होंने गौको छोड़ दिया। सरकारी आदमी उसे मारते हुए महाल रायबागमें ले गये और वहाँ उसे कसकर बाँध रखा। गौने खाना-पीना छोड़ दिया और वैसे ही, बिना कुछ खाये-पीये, आठ दिन जहाँ-की-तहाँ खड़ी रही। यह देखकर मैजिस्ट्रेटको दया आयी और उन्होंने गौ अभियुक्त (सुलतान पाटिल) के ही हवाले कर देनेका हुक्म दिया।

अभियोग झूठा था। अभियोग रचनेवाले कुछ हिंदू ही थे और उनमें कुछ ब्राह्मण भी शामिल थे। पासके ही एक गाँवका महार इस कामके लिये खड़ा किया गया था। उसीको फरियादी बनाकर उसके द्वारा यह मामला दायर कराया गया था। पुलिस इंसपेक्टरने पाटिलसे सबूत माँगा तो उन्होंने सब सच्चा हाल उन्हें सुना दिया और कहा कि मेरे पास और कोई सबूत नहीं है। पुलिस इंसपेक्टरने सच्चे-झूठेकी पूरी जाँच करायी। फरियादी महार उस गौको जिस पासके एक गाँवके महारसे खरीदी बतलाता था, उस गाँवमें यह गौ छोड़ दी गयी, पर वह गौ न तो उस बेचनेवाले महारके घर गयी, न फरियादी महारके घर, बल्कि वहाँसे छः मीलके फासलेपर चिंचली गाँवके इन सुलतान पाटिलके घर सीधी चली आयी। अन्तमें सत्यकी विजय होती ही है। सरकारी हुक्मसे सम्मानके साथ वह गौ पाटिलके घर पहुँचायी गयी; गौको और सबको बड़ा आनन्द हुआ।

इस गौने पाटिलको चार बछड़े और तीन बछियाएँ दीं। वह स्वयं रोज तीन सेर दूध अन्ततक दिया करती थी। मृत्युके दिन वह गौ रोजकी तरह चरने गयी और चरते-चरते एकाएक नीचे बैठ गयी और स्वर्गको सिधार गयी। पाटिलने उसकी स्मृतिमें एक समाधि-मन्दिर बनाया है। उस गौके वंशका अच्छा विस्तार हुआ है। पाटिल इन बछिया-बछड़ोंको इस शर्तपर लोगोंको देते हैं कि कोई इन्हें बेचे नहीं। इस प्रकार पाटिलकी गोभक्तिका फल सबको मिल रहा है। (गो० ज्ञा० को०)

२६ गोसेवाके फल

(प्रेषक—वैद्यपञ्चानन के० के० श्रीनिवासाचार्य)
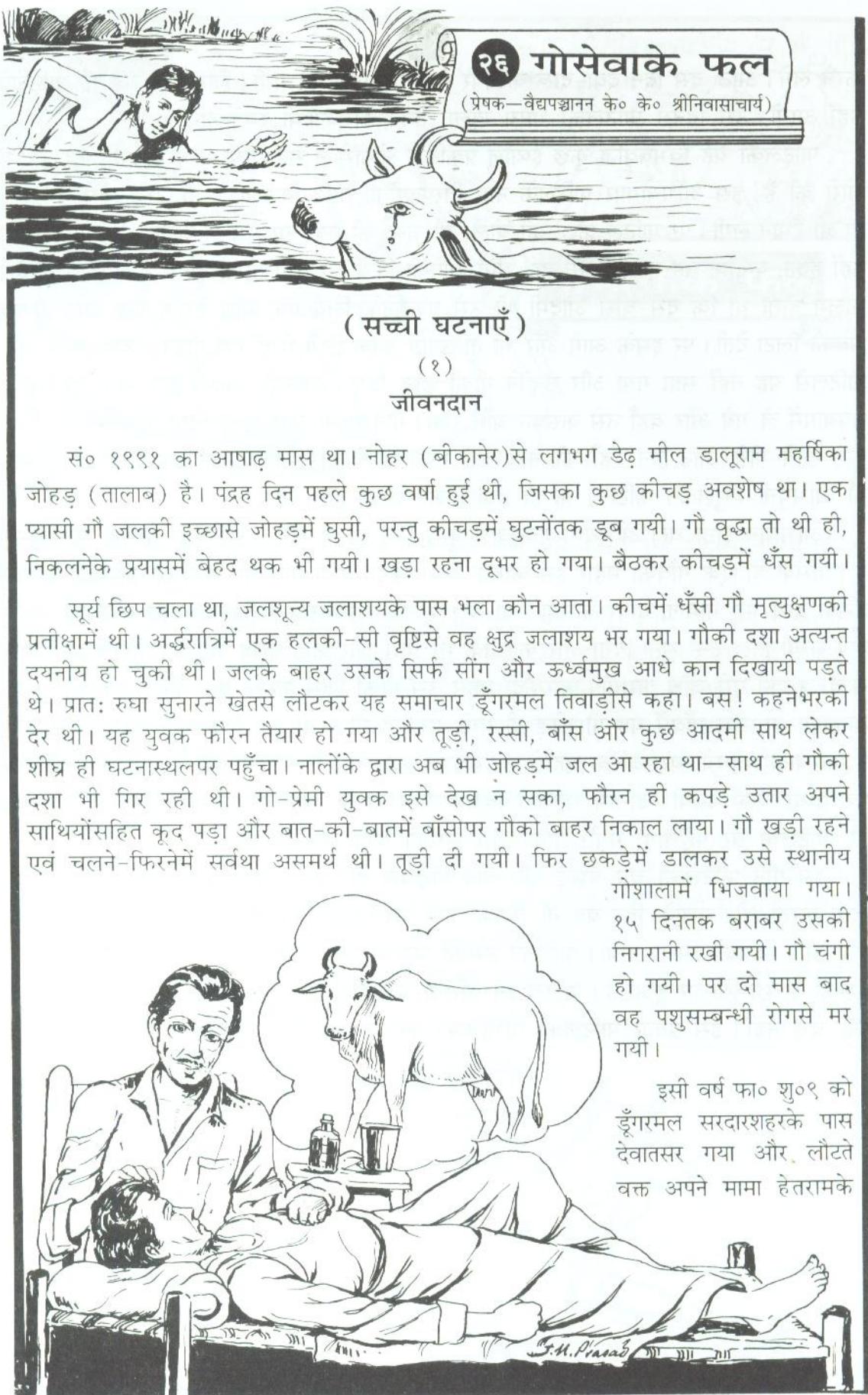
(सच्ची घटनाएँ)

(१)

जीवनदान

सं० १९९१ का आषाढ़ मास था। नोहर (बीकानेर)से लगभग डेढ़ मील डालूराम महर्षिका जोहड़ (तालाब) है। पंद्रह दिन पहले कुछ वर्षा हुई थी, जिसका कुछ कीचड़ अवशेष था। एक प्यासी गौ जलकी इच्छासे जोहड़में घुसी, परन्तु कीचड़में घुटनोंतक डूब गयी। गौ वृद्धा तो थी ही, निकलनेके प्रयासमें बेहद थक भी गयी। खड़ा रहना दूभर हो गया। बैठकर कीचड़में धँस गयी।

सूर्य छिप चला था, जलशून्य जलाशयके पास भला कौन आता। कीचमें धँसी गौ मृत्युक्षणकी प्रतीक्षामें थी। अर्द्धरात्रिमें एक हलकी-सी वृष्टिसे वह क्षुद्र जलाशय भर गया। गौकी दशा अत्यन्त दयनीय हो चुकी थी। जलके बाहर उसके सिर्फ सींग और ऊर्ध्वमुख आधे कान दिखायी पड़ते थे। प्रातः रुघा सुनारने खेतसे लौटकर यह समाचार डूँगरमल तिवाड़ीसे कहा। बस! कहनेभरकी देर थी। यह युवक फौरन तैयार हो गया और तूड़ी, रस्सी, बाँस और कुछ आदमी साथ लेकर शीघ्र ही घटनास्थलपर पहुँचा। नालोंके द्वारा अब भी जोहड़में जल आ रहा था—साथ ही गौकी दशा भी गिर रही थी। गो-प्रेमी युवक इसे देख न सका, फौरन ही कपड़े उतार अपने साथियोंसहित कूद पड़ा और बात-की-बातमें बाँसोपर गौको बाहर निकाल लाया। गौ खड़ी रहने एवं चलने-फिरनेमें सर्वथा असमर्थ थी। तूड़ी दी गयी। फिर छकड़ेमें डालकर उसे स्थानीय गोशालामें भिजवाया गया। १५ दिनतक बराबर उसकी निगरानी रखी गयी। गौ चंगी हो गयी। पर दो मास बाद वह पशुसम्बन्धी रोगसे मर गयी।

इसी वर्ष फा० शु०९ को डूँगरमल सरदारशहरके पास देवातसर गया और लौटते वक्त अपने मामा हेतरामके

पास चूरू उतर गया। १२ को उसे १०५ ज्वर हो गया, साथमें वायुका प्रचण्ड कोप भी था। उसने अपने मामासे घरवालोंको सूचना देनेके लिये कहा भी, पर उन्होंने परवा न की। इधर उसके बड़े भाईके मनमें खलबली मची कि देवातसरसे लौटनेका समाचार तो मिल चुका; फिर क्या कारण है कि डूँगर अभीतक नहीं पहुँचा। हितैषी चित्त बहुधा अशुभचिन्तक होता है, आखिर भ्रातृ-प्रेममें व्याकुल होकर ये गाड़ीपर चल पड़े। रास्तेमें चूरू इसलिये उतर गये कि मामासे शायद डूँगरका पता मिल जाय। डूँगर वहाँ रोगशय्यापर मिला। वैद्य विद्याधरजी मँडावेवालेको दिखलाया, भयंकर सन्निपात और डबल न्यूमोनिया कायम किया। बड़ी तत्परतासे चिकित्सा आरम्भ हुई। सेवा-शुश्रूषामें कोर-कसर न थी, परन्तु रोगीकी दशा प्रतिपल गिरती जा रही थी। चै० कृ० ६ को वैद्यजीने खुले शब्दोंमें कह दिया—आजकी रात खतरनाक है, सचेष्ट रहकर दवा देते रहें।

रोगीके भाई बद्रीनारायणके धैर्यका पुल टूट चुका था। रोगीकी दशा स्पष्ट थी—शरीर बर्फके समान शीतल था, हृदयमें थोड़ी धड़कन शेष थी, काम खत्म-सा था। बेचारा बद्रीनारायण परिवारशून्य धर्मशालाकी कोठरीमें म्रियमाण भाईके गले लग-लगकर बेहाल हो रहा था। दो-तीन दिनसे कुछ खाया नहीं था। आँखें फूल गयी थीं, गला छिल गया था, शरीर टूट रहा था; कहीं चैन न था। डूँगरमल तो बेचारा अनन्त शयनकी तरफ बढ़ रहा था; उसे क्या पता कि उसका भाई बिलख-बिलखकर करुण विलाप कर रहा है!

ब्राह्ममुहूर्त्त है। स्वप्न नहीं, जंजाल नहीं। डूँगरमलको प्रत्यक्ष दिखायी दिया कि वही गौ, जिसको नव मास पूर्व उसने जोहड़के कीचसे निकाला था, खड़ी हुई कह रही है—'डूँगर! एक दिन तुमने मुझको उबारा था, आज मैं तुम्हें उबार रही हूँ। अब तुम्हारा रोग समाप्त हो गया है—तुम्हारे शरीरको अब कोई खतरा नहीं है।' गौ अदृश्य हो गयी। डूँगरको भी ज्ञान-सञ्चार हो गया। उसे मालूम हुआ कि उसका भाई उसके लिये बेहाल हो रहा है। परन्तु इन्द्रियाँ जड़ हो गयी थीं। ज्ञानेन्द्रियों अथवा कर्मेन्द्रियोंसे किसी भी तरह अपने भाईको सान्त्वना देनेमें वह असमर्थ था। कुछ देर बाद उसने आँखें खोलीं और इशारोंसे समझाना शुरू किया। यथा-कथञ्चित् अपना मनोगत भाव कह डाला। प्रातः वैद्यजी आ गये थे। अपने रोगीके इस अवस्थामें मिलनेकी उन्हें बिलकुल आशा न थी। रात्रिका वृत्तान्त उनसे भी कहा! वे आस्तिक विचारके मनुष्य थे, बात जँच गयी। रोगीका रोग तो नष्ट हो ही चुका था, पथ्य-प्रदानमें दो-तीन दिन लगे; फिर दोनों नोहर लौट आये।

(२)

जल-परिवर्तन

सं० १९८० के लगभग सेठ सादीरामजी पचीसिया कलकत्तेसे अपने घर नोहरको सिरसा स्टेशनसे आते हुए फेफाना गाँवमें ठहरे। पाँच सौ घरोंकी बस्ती तथा चारों तरफ छोटे-छोटे गाँवोंकी आबादी देखकर इनके हृदयमें इच्छा हुई कि यहाँ एक कुआँ चला दिया जाय और प्याऊ लगा दी जाय। उन्होंने अपना विचार ग्रामके गण्य-मान्य व्यक्तियोंको बुलाकर प्रकट किया। लगभग सभीने स्वीकृति दे दी। परन्तु एक बुड्ढेने सभीको सम्बोधित करते हुए कहा—'देखो! इतना बड़ा गाँव है; गाँव भूखा भी नहीं, दोनों फसलें होती हैं। दूसरे किसी धर्मका व्यवहार भी नहीं है; सिर्फ यही एक तरीका है कि कुआँ चला देते हैं। सो इसे भी तुम अपने हाथसे खो रहे हो। विचार लो, गाँवपर कुएँका ज्यादा भार नहीं है।' बुड्ढेकी बात लोगोंके जँच गयी। इधरसे सादीरामजीने पूछा तो बुड्ढेने कहा,—'सेठ साहिब! कुआँ तो गाँव ही चलावेगा। गाँवको गोसेवामें पूर्ण विश्वास हो चुका है। देखिये गत वर्षकी बात है—लालखाँकी ढाणीवाले कुएँपर 'गोल' की गायें एक दिनके अन्तरसे पानी पिया करती थीं। एक दिन लालखाँकी ढाणीवाले कुएँके संचालकोंने गायोंको तब पानी पीनेसे मना किया जब कि गायें तीसरे दिन तीन कोस चलकर जल पीनेके लिये आ गयी थीं। ग्वालेने बहुत कहा कि 'सिर्फ आज-आज आपलोग
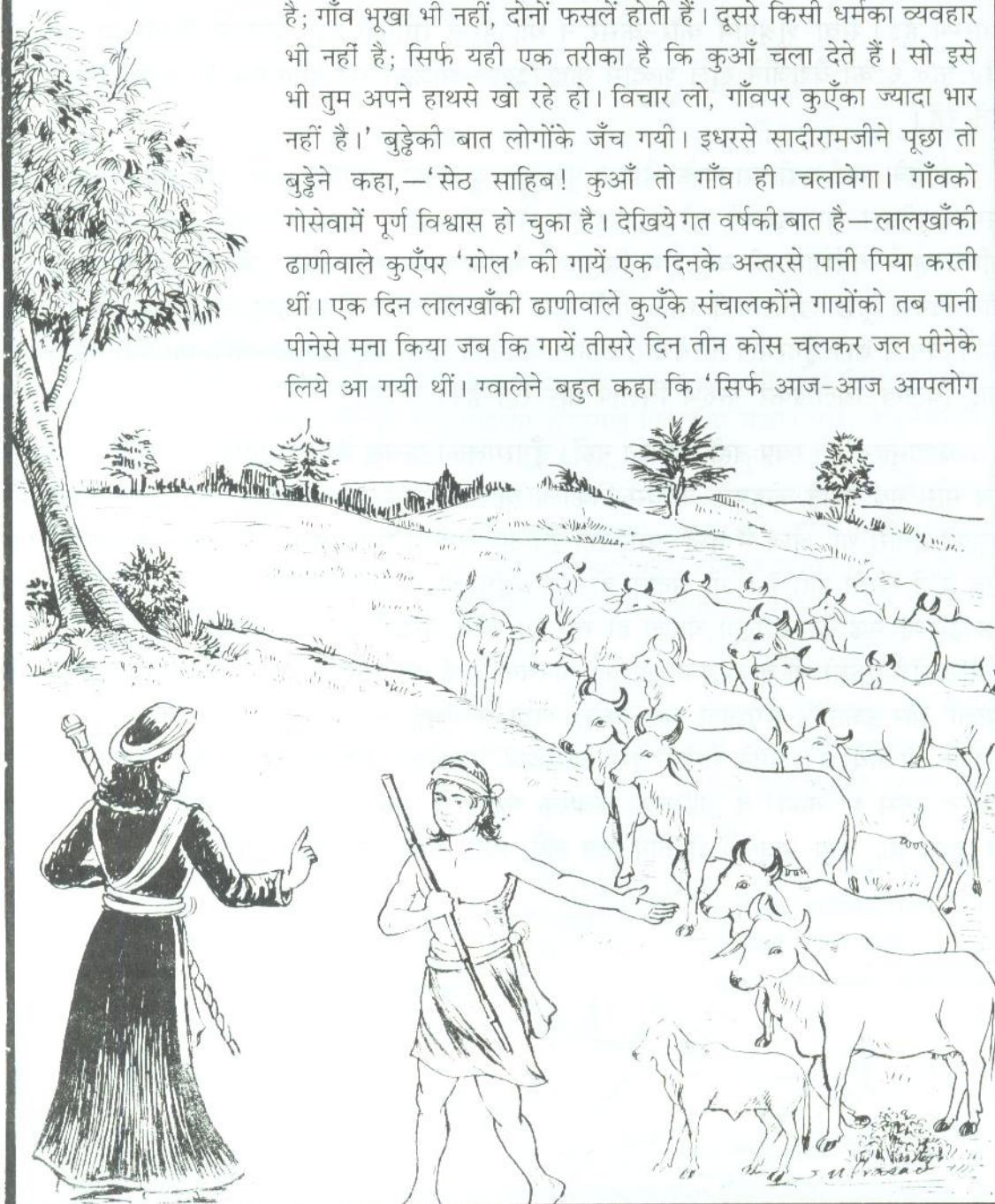
गायोंको पानी पी लेने दें, क्योंकि ये तीन दिनकी प्यासी हैं। और फिर पास कहीं मीठा पानी भी नहीं, जहाँ इनको पिला सकूँ। आप कृपा करके सिर्फ एक दिनके लिये आज्ञा फरमायें।' परन्तु जाटका हृदय नहीं पसीजा, 'ना' कहकर 'हाँ' कहना वह नहीं जानता था। बहुत मिन्नतें करनेके बाद भी जब कोई लाभ न हुआ, तब म्लानमुख गायोंको विषण्णवदन ग्वालेने वापस हाँक लिया। तीन कोस जाकर देईदास गाँवपर उनको पानी पिलाया। इस गाँवका पानी बहुत खराब था, जो अब दूधके समान हो गया है। और अभागे लालखाँकी ढाणीवाले कुएँका जल तो इतना बिगड़ा कि हाथ धोनेलायक भी नहीं रह गया।

गोदुग्धसे चमत्कारी उपचार

हमारे यहाँ गायको माता और दुग्धको अमृत माना जाता है और इसका चमत्कारी प्रभाव आज भी दिखायी पड़ता है। घटना सम्भवतः १९४५ के आस-पासकी है। काशीके प्रख्यात वैद्य पं० राजेश्वरदत्त शास्त्रीके यहाँ बिहारके एक सम्पन्न जमींदार अत्यन्त क्षीण अवस्थामें अपनी पत्नीको लेकर उपचारके लिये आये। उनकी पत्नी ३० वर्षकी आयुमें ही सूखकर काँटा हो गयी थीं। पूरा शरीर झँवरा गया था और वे भयानक पीड़ासे बेचैन थीं। जमींदारने बताया कि कई वर्षोंसे वे उपचारके लिये चारों ओर दौड़कर थक गये, किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। किसीको इनके रोगका थाह नहीं लगता। यह सुनकर वैद्यजीने मुस्कराते हुए कहा—'अच्छा अब आप शान्त हो जायँ।' इतना कहकर वैद्यजीने उनकी पत्नीकी नाड़ी देखी। कुछ देर विचार किया और जमींदारको एकान्तमें बताया कि इन्हें कैंसर हुआ है, किंतु घबरानेकी कोई बात नहीं है। भगवान्‌का नाम लेकर धैर्य और परहेजसे यदि दवा करेंगे तो छः माहमें ठीक हो जायँगी। इनकी दवा और भोजन केवल काली (श्यामा) गायका दूध और काली तुलसीकी पत्ती होगा। अतः ये जितना खा-पी सकें वही दूध और पत्ती दीजिये। यदि स्वाद बदलनेकी इच्छा हो तो मूँगकी दालका रस और जौकी रोटी दे सकते हैं। साथमें कोई भी दवा लेना गोदुग्ध और तुलसीका अपमान होगा और उससे हानि भी हो सकती है। गाय और तुलसी दोनों हमारी माताएँ हैं। वैद्यजीकी बतायी दवापर पूर्ण विश्वास रखते हुए वे अपनी पत्नीके साथ वापस लौट आये और तदनुसार ही गोदुग्ध और तुलसीका सेवन करने लगे। धीरे-धीरे समय बीतता गया।

छः माह बाद जमींदार अपनी पत्नीके साथ जब वाराणसीमें वैद्यजीके यहाँ आये तो स्वस्थ, सुन्दर एवं प्रसन्न महिलाको देखते ही वे पहचान गये और स्वयं हर्षित होकर बोल पड़े—'देखा न गोदुग्ध और तुलसीका चमत्कार।' जमींदारने बताया—उन्होंने काली तुलसीका एक बड़ा बगीचा ही लगवा दिया था और चार-पाँच काली गायें रख ली थीं। महीनेभर सेवन करते-करते उनकी पत्नी पर्याप्त स्वस्थ हो गयीं। जमींदारने श्रद्धापूर्वक वैद्यजीको बहुत आग्रहपूर्वक कुछ देना चाहा और ग्रहण करनेकी प्रार्थना भी की, किंतु वे बोले—'मैंने अपने औषधालयसे आपको कोई दवा दी नहीं तो पैसे किस बातके लूँ। हाँ, गोमाताने आपपर कृपा की है, अतः यह धन किसी गोशालाको दान दे दीजिये।'

वैद्य पं० शास्त्रीके दुग्धोपचारकी इस चमत्कारी घटनाकी चर्चा वाराणसीके बुजुर्ग आज भी करते हैं। कैंसरपर सम्पूर्ण विश्वमें रिसर्च हो रहा है और अभीतक यह रोग असाध्य ही माना जाता है, किंतु शास्त्रीजीने पचासों वर्ष पूर्व गोदुग्धके बलपर सफलता प्राप्त की थी। इसमें निश्चित ही गोमहिमाके साथ ही उनकी आस्था एवं परोपकारी भावना जुड़ी हुई थी।
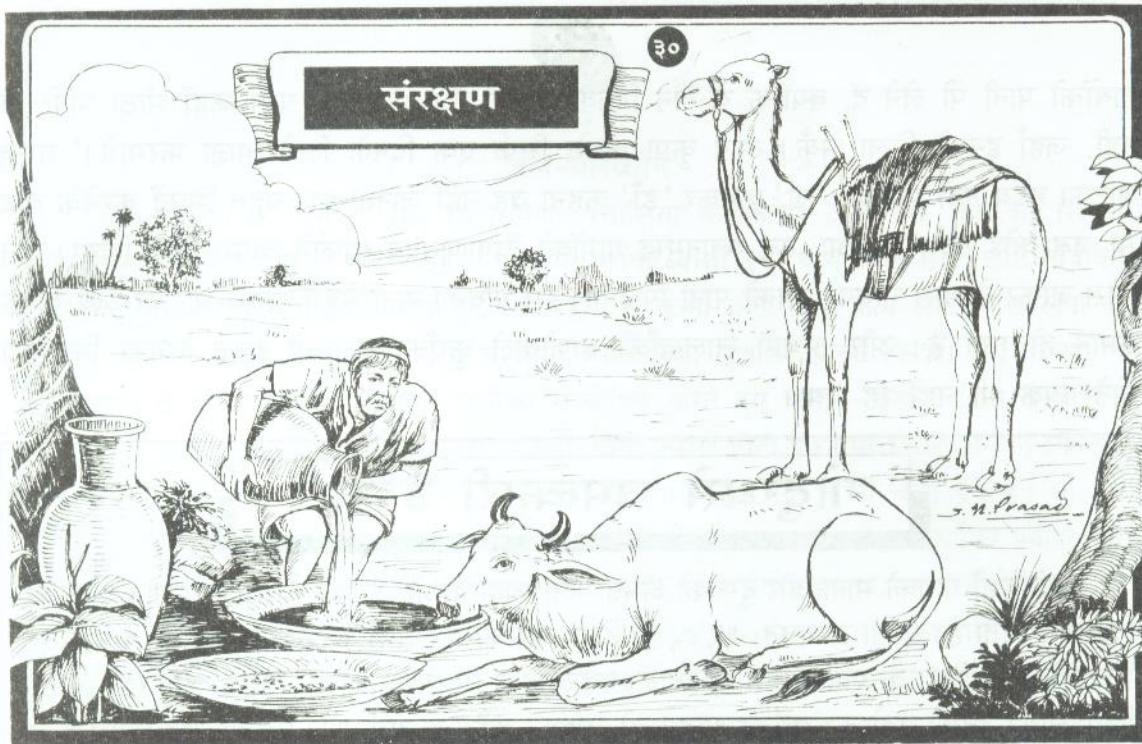
(३)

संरक्षण

सेठ सादीरामजी पचीसियेके एक नौकर था, नाम था उसका साँवल। वह कहा करता कि मेरा परदादा जोधपुर स्टेटसे उठकर नोहर (बीकानेर) तहसीलके गाँव विडवराणामें बस गया। एक दिन उसको खेत जाते वक्त घायल गौ पड़ी मिली। पैरके अत्यधिक घायल होनेसे वह चलनेमें असमर्थ थी। साँवलके परदादाने विचार किया कि गौ तीन-चार दिनकी प्यासी होगी; वह शीघ्र ही ऊँटपर गाँवसे चौघड़ ले आया, साथ कुछ चूरी भी। गौ दो घड़े पानी पी गयी और चूरी भी खा गयी। खेतसे दो-चार पूले भी उसने गायके आगे तोड़कर डाल दिये। उसका यह क्रम तबतक बराबर चलता रहा, जबतक गौ अपने-आप उठकर अन्य स्थानको न चली गयी।

साँवलका परदादा कूई खोदनेमें बड़ा चतुर था। विडवराणेमें वह कूई खोदता था। बीकानेरी कूईमें ६०-७० हाथ नीचे जल रहता है। बालूकी भूमिमें कूई खोदना साँपके मुँहमें हाथ डालना होता है, क्योंकि कूईके ऊपरसे ढह जानेकी आशङ्का बनी ही रहती है। इस वक्त ऐसा ही हुआ। जल निकलनेवाला ही था कि कूई ढह गयी।

साँवलका परदादा वृद्ध तो था ही—सबसे बड़ी बात यह थी कि वह बहुत गरीब था। भला! ऐसे आदमीके इस प्रकार मरणपर भी किसीको क्यों दुःख होता। गाँवके मुखियाने घरवालोंको समझा दिया कि 'वह तो अब खत्म हो चुका—हजारों मन मिट्टी उसपर गिर पड़ी। अब यदि उसकी लाशके लिये यत्न किया भी जाय तो औरोंके मरनेका खतरा है। क्योंकि भूमि चारों तरफसे चल पड़ी है, अब तो सन्तोषमें ही सार है, उसकी यों ही मौत थी।'

साँवलका परदादा दरिद्र तो था ही, गाँवके काममें वह योग देता था। अतः गाँववालोंने

मिलकर उसके द्वादशाहपर 'मीठे चावल' का विचार इसलिये किया कि कहीं साँवलका परदादा भूत न हो जाय।

मीठे चावलोंके लिये पवित्र जल लानेको एक कुएँमें डोल डाला गया। यह कुआँ उपर्युक्त कूईकी खुदाईके २०-२५ हाथकी दूरीपर ही था, डोल अन्दर जाते ही अटक गया। देखा तो एक काली आकृति डोलको पकड़े हुए है। पूछनेपर उसने बताया कि मैं साँवलका परदादा हूँ। बस, फिर क्या था, धैर्यधारियोंके भी छक्के छूट गये। सभी पानी भरनेवाले सिरपर पैर रखकर भागे। गाँवमें आकर उन्होंने साँवलके परदादाके भूत होनेका हाल खूब नमक-मिर्च लगाकर कहा, सभी दंग रह गये। सभीने यही अनुमान किया बेचारा अकालमृत्युसे मरा है; उसकी यह हालत न होगी तो क्या होगी।

गाँवोंमें कुछ साहसी भी होते हैं, उन्होंने कहा कि हम कुएँमें जाकर देखेंगे कि मामला क्या है। बात जँच गयी। दो दिलेर लट्ठ लेकर उतर पड़े। कुछ फासला रहा तो उससे पूछा कि 'तू भूत कैसे हो गया और तेरा छुटकारा कैसे हो।' उसने कहा —'तुम अन्धे हो जो मुझे भूत कह रहे हो? मैं साक्षात् साँवलका परदादा हूँ। तुम मुझे पहचानते नहीं, क्या भूत ऐसा ही होता है?' बात ठीक मालूम हुई। कम्बलमें लपेटकर उसे कुएँसे बाहर निकाला गया। दूसरे दिन उसने अपनी मौतकहानी यों सुनायी—

'आपने तो मुझे मरा समझ ही लिया था, पर मैं श्रीगोमाताकी दयासे बच आया हूँ।'

कूई ढहकर मेरे सिरसे दो-तीन हाथ ऊपर रुक गयी। मैं थोथमें खड़ा था। सोचा इससे मर जाता तो अच्छा होता। प्रारब्धका खेल। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहा था कि मुझे भूख लगी। मैंने देखा कि वही गौ, जिसकी आर्त्तदशामें मैंने सेवा की थी, खड़ी है और अपना थन मेरे मुखसे लगा रही है। मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। भूख थी, खूब डटकर दूध पिया। अब गौ एक तरफ भीतमें सींग मारकर सङ्केत करने

लगी, पर मेरी समझमें नहीं आया। आखिर खड़े होकर मैंने देखा कि गौका सङ्केत एक साहीके बिलकी तरफ है। यह बिल कूईसे कुएँतक मिला था, हवा भी कुछ-कुछ आती थी। खुदाईके औजार सब मौजूद थे ही, मैंने खोदना शुरू किया। जब भूख लगती, गौ आ जाती; थकता तो सो जाता। रात-दिनका कुछ पता न था। इस प्रकार आज गोमाताकी कृपासे मैं आपके सम्मुख हूँ। यह मेरा नवजीवन है—पुनर्जन्म है।'*

* ये तीनों वृत्त मुझे वयोवृद्ध सेठ सादीरामजी पचीसियासे प्राप्त हुए थे। स्वतन्त्र खोज करनेपर भी ये सत्य साबित हुए।
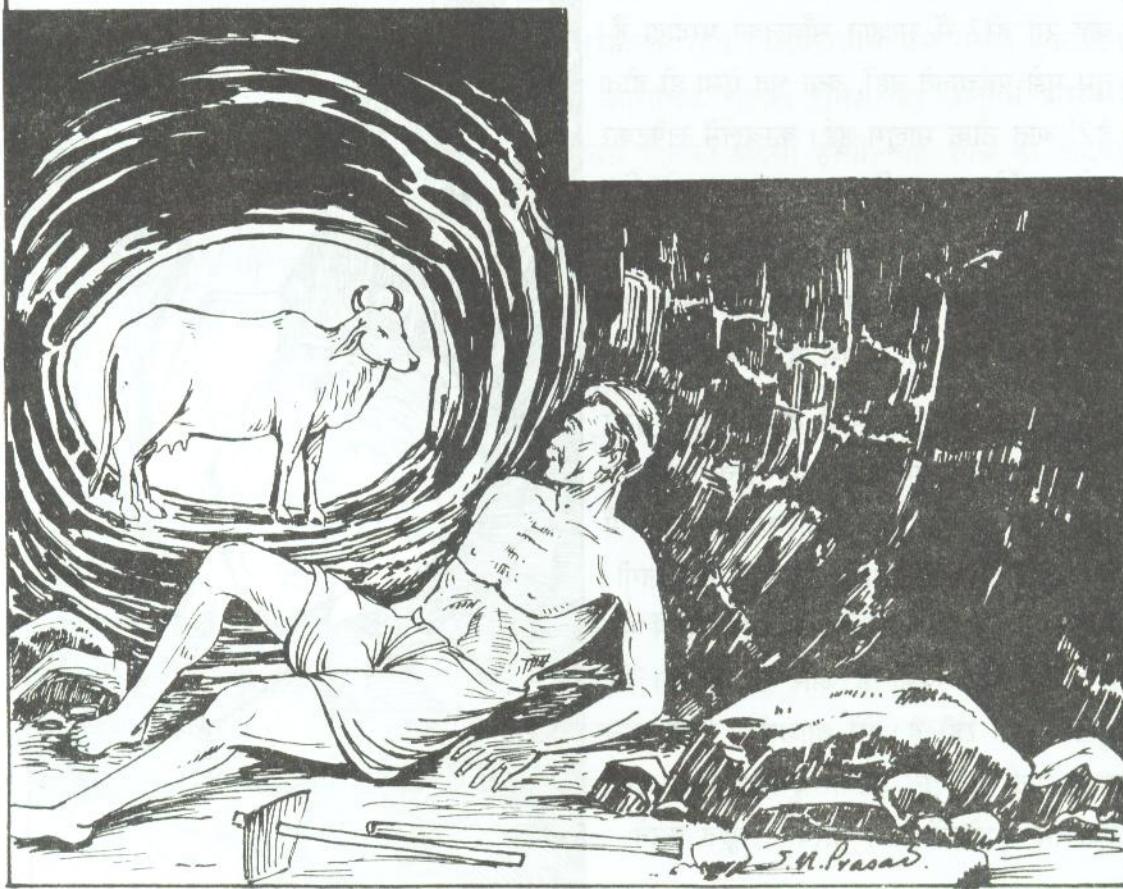
और गो-सेवाके माहात्म्यके विषयमें हृदयमें विश्वास और दृढ़ता उत्पन्न हो जाती है।

अब वृद्धावस्थामें मैंने भी अपने एक गृहस्थ शिष्यको गो-सेवा करनेका उपदेश दिया है और ढंग बतला दिया है। सुना है कि उसकी पत्नीको गर्भ है। आशा करता हूँ कि यथाकाल भगवान्‌की कृपासे उसे सन्तानकी प्राप्ति होगी। गो-सेवाका माहात्म्य प्राचीनकालमें भी था, वर्तमानमें भी है और भविष्यमें भी रहेगा। यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

गो-सेवाके माहात्म्यका वर्णन अनन्तकालतक करनेपर भी समाप्त न होगा। जान पड़ता है कि हृदयसे गो-सेवा करनेके फलस्वरूप ही गोकुलवासियोंको भगवान् श्रीकृष्णकी प्राप्ति हो सकी थी।

गोविन्दाय नमस्तस्मै गोपालाय नमो नमः।

गोघृतके चमत्कार

श्यामा गायके घृतके प्रयोगसे मैंने स्वयं अनेक दु:खी व्यक्तियोंको रोगमुक्त होते देखा है। इससे गठिया, कुष्ठरोग, जले तथा कटे घावके दाग, चेहरेकी झाँई, नेत्र-विकार, जलन, मुँहका फटना आदिपर आश्चर्यजनक लाभ होता है।

इसी प्रकारकी एक घटना और है। कुछ वर्ष पूर्व एक व्यक्तिको गठिया रोग हो गया। रुग्ण व्यक्ति स्वयं सम्पन्न थे और उनके यहाँ सौभाग्यसे एक श्यामा गाय भी थी। उस गायको एक माहतक हरे चारेके अतिरिक्त ढ़ाई-ढ़ाई सौ ग्रामकी मात्रामें गेहूँ, गुड़, कच्ची गरी, कच्ची मूँगफली, आमा हल्दी, चना, सफेद दूब, बेलकी पत्ती, महुआ, सेंधा नमक, सफेद नमक तथा अजवाइन और मेथी ५०-५० ग्राम प्रतिदिनके हिसाबसे एक माहतक खिलाया गया। गर्मीका समय था, अत: गायको अत्यन्त स्वच्छ वातावरणमें रखकर दोनों समय नहलाया-धुलाया जाता था। प्रात: और सायं थोड़ा गुड़ खिलाकर तीसरे दिनसे निकाले गये उक्त गायके दूधसे ग्रामीण पद्धतिके अनुसार गोहरीकी आँचपर मिट्टीके पात्रमें पकाये गये दूधसे दही तैयार कर उसका घी निकाला गया और इसी घीकी मालिशसे हफ्ते भरमें गठिया गायब हो गया। इस घटनासे आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता हुई और उस घीका प्रयोग कई लोगोंपर किया गया। जिसमें शत-प्रतिशत सफलता मिली। मेरे एक मित्रकी ऑपरेशनके दौरान नाकमें हफ्तों नली पड़नेके कारण आवाज चली गयी थी। प्रयास करनेके बावजूद १५-२० दिन बाद भी वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। मजबूर होकर वे अपनी बातें कागजपर लिख देते थे। तीन-चार दिन गलेमें उक्त घीकी मालिश करते ही उनकी आवाज खुलने लगी और ८-१० दिनमें वे पूर्ववत् बोलने लगे।

तीसरी घटना एक युवकसे सम्बन्धित है। प्रिंटिंग मशीनसे दबकर उसके बायें हाथकी हथेली तथा कई अंगुलियाँ बुरी तरह फट गयीं। अँगूठा तो कटकर अलग हो गया। तत्परतासे ऑपरेशन एवं दवाके बाद दो-ढ़ाई माहमें जब उसका हाथ ठीक हो गया तो चमड़ेके तनाव और ऑपरेशनके दागसे उसकी अंगुलियाँ खुल नहीं पाती थीं और पूरी हथेली बदसूरत लग रही थी। इस घीकी मालिशसे महीने भरमें ही शेष चारों अंगुलियाँ और हथेली पूर्ववत् हो गयीं और ऑपरेशनका दाग एक सामान्य रेखाके रूपमें शेष रह गया।

इसी प्रकार एक और घटना है। वाराणसी नगरके एक सम्भ्रान्त परिवारकी सुशील एवं सुन्दर कन्याके गलेमें जगह-जगह सफेद दाग हो जानेसे पूरा परिवार चिन्तित था। लड़की स्वयं हीन भावनाके कारण उदास दिखायी देती थी। उनके आग्रहपर उस लड़कीको श्यामा गायका वही घृत लगानेके लिये दिया गया। महीना बीतते-बीतते सफेद दागके स्थानपर लाली आने लगी और दूसरे माहमें उसकी त्वचा एक रंगकी हो गयी। उसे देखकर कोई कह नहीं सकता कि गलेमें कभी कोई दाग था।

इसी प्रकार जोड़ोंमें दर्द, नेत्र-सम्बन्धी विकार, चोट, सूजन, फोड़े-फुंसी आदि अनेक विकारोंसे पीड़ित अनेक लोगोंका उक्त घृतसे उपचार किया गया, जिसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई।

३६

गौका मूल्याङ्कन

कहानी—

'प्राचीनकालकी बात है भृगुके पुत्र च्यवन नामक एक महर्षि थे। वे बड़े तपस्वी थे। एक बार उन्होंने एक महान् व्रतका आश्रय लेकर जलके भीतर रहनेका संकल्प किया। अभिमान, क्रोध, हर्ष, सुख-दुःख, शोक आदिका परित्याग कर वे बारह वर्षतक पानीके

अन्दर ही समाधिस्थरूपमें रहे। महात्माके ऐसे स्वभाव व तपश्चर्या देखकर सभी जलचर प्राणी उनके मित्र बन गये। जलचर मत्स्यादि प्राणियोंको उनसे कोई भय नहीं लगता था। एक बार महर्षि च्यवन अत्यन्त श्रद्धाभावसे नत होकर गङ्गा-यमुनाके संगममें जलके भीतर प्रविष्ट हुए। कभी जल-समाधि लगा लेते, कभी निश्चेष्ट हो जलके ऊपर बैठ जाते। इस प्रकार व्रतानुष्ठान करते-करते बहुत समय व्यतीत हो गया। एक दिन कुछ मल्लाह मछलियोंको पकड़नेकी इच्छासे हाथमें जाल लिये उस स्थानपर आये जहाँ महर्षि च्यवन जल-समाधि लगाये थे। मल्लाहोंने मछली पकड़नेके उद्देश्यसे जालको पानीमें फैलाया। संयोगसे जालमें मछलियोंके साथ महर्षि च्यवन भी फँस गये। मल्लाह जाल खींचने लगे तो उन्हें अधिक बल लगाना पड़ा। वे समझे कि आज कोई बहुत बड़ी मछली या जलजन्तु

भी जालमें फँस गया है। उन्होंने पूरे जोरसे जाल खींचा, मछलियोंके साथ महर्षि च्यवन भी जालमें फँसकर पानीके बाहर आ गये। उस समय उनके सारे शरीरमें सेवार लिपटा हुआ था।

च्यवनको देखकर सभी मल्लाह बड़े भयभीत हो गये। वे हाथ जोड़कर उनसे क्षमा माँगने लगे। पानीसे बाहर निकलनेपर जालमें फँसी मछलियाँ तड़प-तड़पकर मर गयीं। यह दृश्य देख दयासे उनका हृदय द्रवित हो उठा। उन्होंने मल्लाहोंसे कहा—मैं इन मछलियोंके साथ ही अपने प्राणोंका त्याग कर दूँगा। ये मेरे सहवासी रहे हैं, मैं बहुत दिनोंतक इनके साथ जलमें रह चुका हूँ। मैं इनका साथ नहीं छोड़ सकता। चूँकि ये अब प्राणशून्य हो गयी हैं, अत: मेरा जीवित रहना भी व्यर्थ है, मैं भी अब अपने प्राणोंका उत्सर्ग कर दूँगा।

महर्षिकी यह बात सुनकर मल्लाह भयसे थर-थर काँपने लगे, क्योंकि च्यवन-जैसे महर्षिके प्राणोत्सर्गमें वे निमित्त बन रहे थे। वे उन्हें उसी अवस्थामें वैसा ही छोड़कर दौड़े-दौड़े राजा नहुषके पास पहुँचे और सारी घटना उन्हें निवेदित की। राजा नहुषने उनकी बात बड़े ध्यानसे सुनी और वे अति प्रसन्न हुए कि ऐसे महात्मा आज उन्हें कृतार्थ करने ही इस रूपमें यहाँ आये हैं। वे इसे भगवत्कृपा ही समझकर मन्त्री, पुरोहितों तथा मल्लाहोंके साथ शीघ्र ही उस स्थानपर पहुँचे। उन्होंने अत्यन्त विनयपूर्वक हाथ जोड़कर देवताओंके सत्यव्रती महात्मा च्यवनको प्रणाम किया और विधिपूर्वक उनका पूजन किया और पूछा कि हे प्रभो! आज्ञाके लिये सेवक उपस्थित है, उसे आज्ञा देकर अनुगृहीत करिये।

महर्षि बोले राजन्! आज इन मल्लाहोंने बड़े परिश्रमसे मछलियोंके साथ मुझे भी जालमें फँसाकर निकाला है, किंतु जालमें मुझे फँसा देखकर ये अत्यन्त भयभीत हो
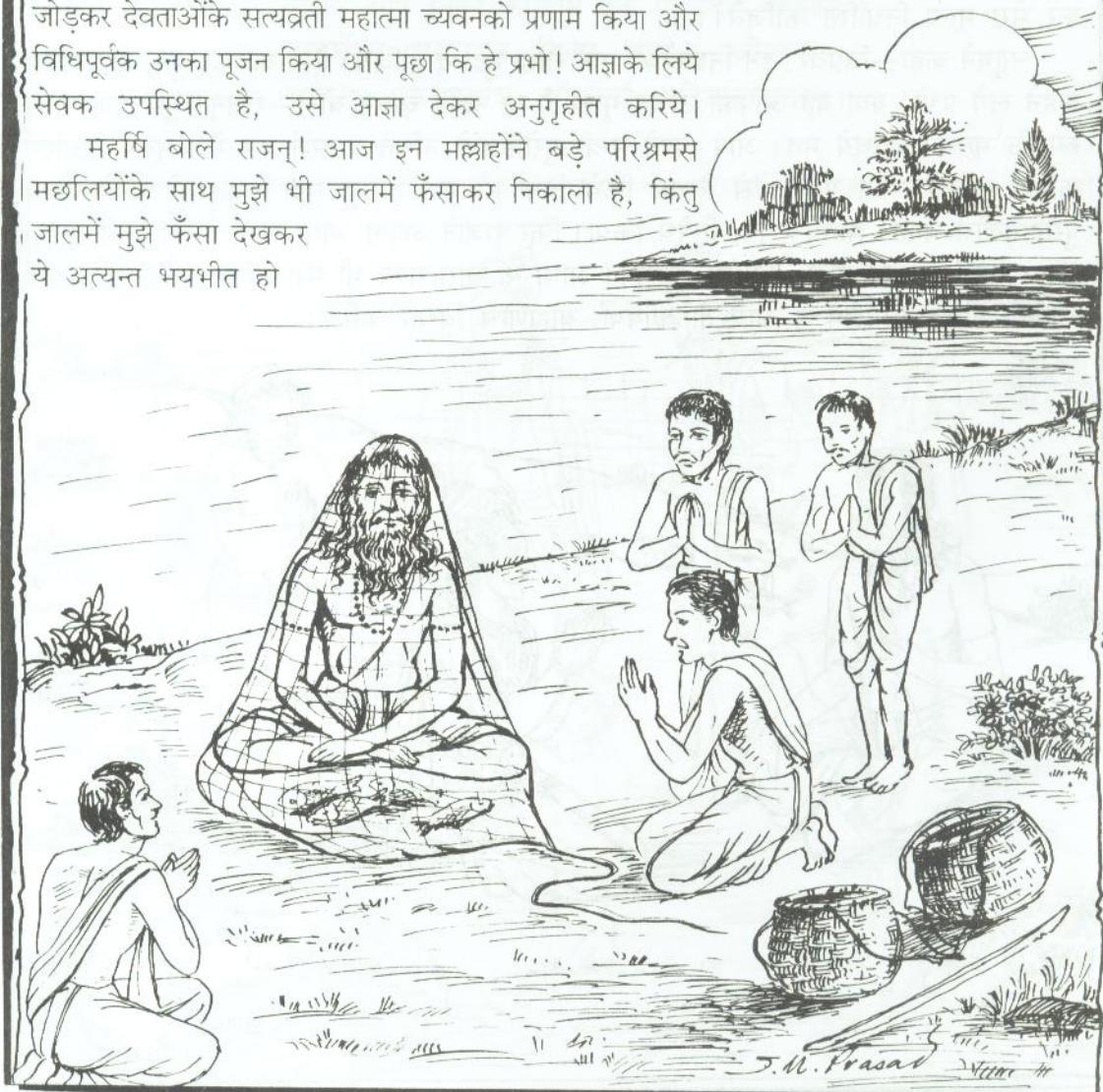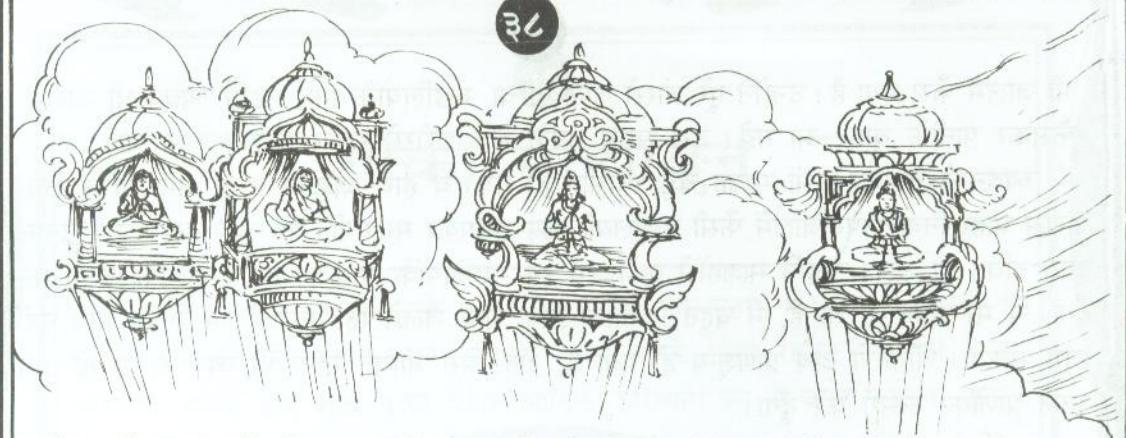
गये। इन्हें मछलियाँ भी प्राप्त नहीं हो सकीं। इनकी आजीविका कैसे चलेगी, अतः आप इन मछलियोंके साथ ही मेरा भी मूल्य चुकाकर इन्हें दे दीजिये ताकि इनकी जीवनचर्या चल सके।

तब नहुषने अपने पुरोहितसे कहा—पुरोहितजी! इन मल्लाहोंमें महर्षिके मूल्यके अनुसार एक हजार अशर्फियाँ दे दीजिये। यह सुनकर महर्षि च्यवन बोले—राजन्! क्या मेरा मूल्य एक सहस्र मुद्राएँ ही हैं, क्या मैं इतने ही मुद्राओंमें बेचने योग्य हूँ? आप अपनी बुद्धिसे ठीक-ठीक निश्चित कर मेरा मूल्य निर्धारित कीजिये।

नहुषने कहा—विप्रवर! इन निषादोंको एक लाख मुद्रा दे दीजिये। ऐसा कहकर पुनः वे महर्षिसे कहने लगे प्रभो! क्या यह आपका उचित मूल्य है या नहीं। च्यवन बोले—राजन्! मुझे एक लाख रुपयेके मूल्यमें बाँधिये मत। आप अपने मन्त्री-पुरोहितोंसे उचित परामर्श कर मेरा मूल्य निर्धारण करिये। राजाने मन्त्री-पुरोहितोंसे विचार किये बिना ही एक करोड़ मुद्रा मल्लाहोंको देनेके लिये पुरोहितजीसे कहा। महर्षिने पुनः निषेध किया। फिर राजाने अपना आधा राज्य देनेके लिये कहा। इसपर महर्षि च्यवन बोले—नृपश्रेष्ठ! आपका आधा या सारा राज्य भी मेरा उचित मूल्य नहीं। यदि आपको ठीकसे समझमें न आये तो ऋषियों, ब्राह्मणोंसे विचार करिये।

यह सुनकर राजा नहुष अत्यन्त दु:खित हो गये। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। तब उन्होंने अपने मन्त्रियों तथा पुरोहितोंसे इस विषयमें विचार करने लगे।

इसी समय फल-मूलका सेवन करनेवाले एक दूसरे वनवासी मुनि राजा नहुषके समीपमें आये और राजासे कहने लगे—''राजन्! आप दु:खी न होइये, मैं इन महर्षिको सन्तुष्ट कर दूँगा और इनका उचित मूल्य भी आपको बता दूँगा। आप मेरी बातको बड़े ध्यानसे सुनिये। मैंने कभी हास-परिहासमें भी असत्य भाषण नहीं किया है, हमेशा मैं सत्य ही बोलता हूँ, अत: आप मेरी बातोंपर शंका मत कीजियेगा।''

राजा नहुषने कहा—हे प्रभो! मैं बड़े संकटमें हूँ। मेरे कारण एक महर्षि अपने प्राणोंका उत्सर्ग करनेको उद्यत हैं। यदि इनका उचित मूल्य आप बता दें तो यह आपका बड़ा अनुग्रह होगा। इस भयंकर कष्टसे मुझे, मेरे राज्य तथा मेरे कुलकी रक्षा कीजिये।

यह सुनकर वे गोजात मुनि कहने लगे—राजन्! ब्राह्मण और गौएँ ये एक ही कुलके हैं, परंतु दो रूपोंमें प्रविभक्त हैं। ब्राह्मण मन्त्र-रूप हैं तो गौएँ हविष्य-रूप। ब्राह्मणों तथा गौओंका मूल्य नहीं लगाया जा सकता। इसलिये आप इनकी कीमतमें एक गौ प्रदान कीजिये।

अनर्घेया महाराज द्विजा वर्णेषु चोत्तमाः।
गावश्च पुरुषव्याघ्र गौर्मूल्यं परिकल्प्यताम्॥

(महा० अनु० ५१। २२)

उनका यह वचन सुनकर राजा नहुष तथा पुरोहित-वर्ग अत्यन्त प्रफुल्लित हो उठा। वे शीघ्र ही
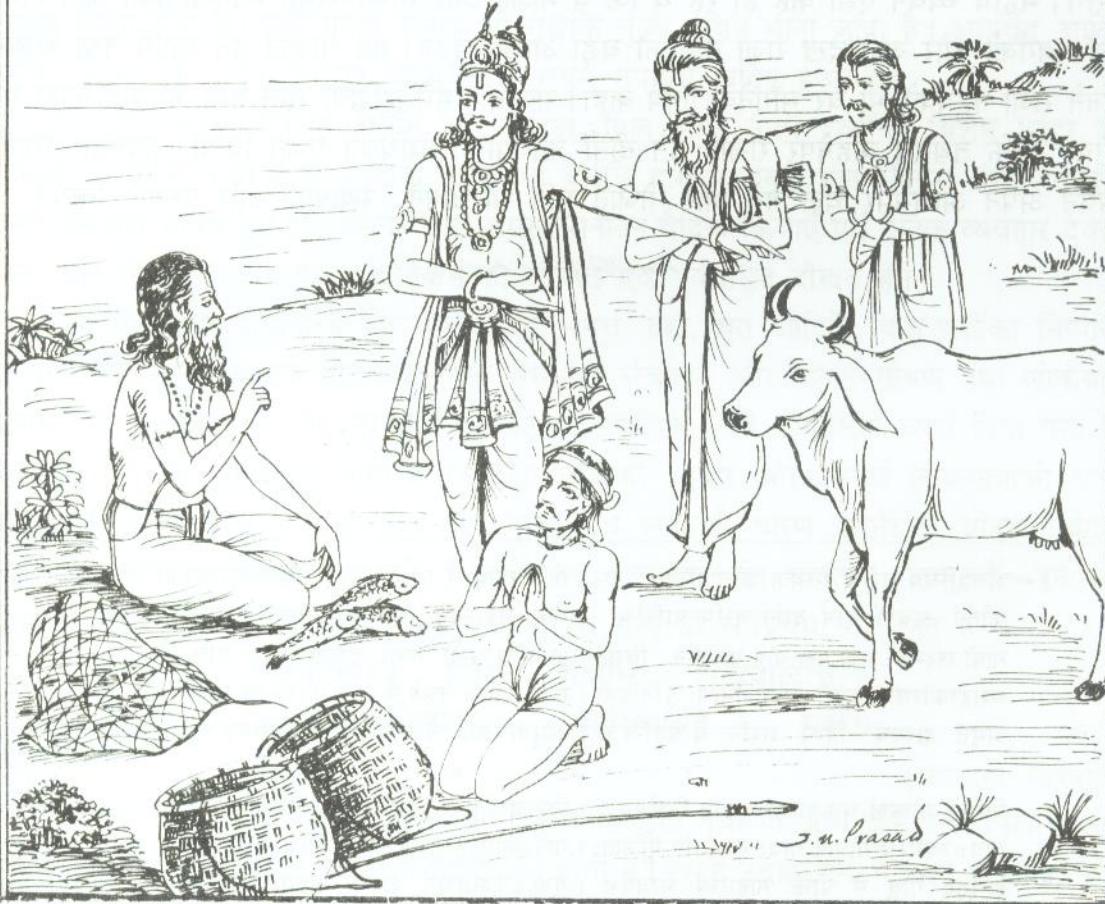
महर्षिके पास जाकर बोले—हे ब्रह्मन्! मैंने एक गौ देकर आपको खरीद लिया, अतः उठिये, उठिये, मैं आपका यही उचित मूल्य मानता हूँ। राजाकी बात सुनकर च्यवन बोले—राजन्! आपने उचित मूल्य देकर मुझे खरीदा है। निश्चित ही इस संसारमें गौओंके समान कोई दूसरा धन नहीं है। गौओंके नाम और गुणोंका कीर्तन तथा श्रवण करना, गौओंका दान देना और उनका दर्शन करना—इनकी शास्त्रोंमें बड़ी प्रशंसा की गयी है। ये सब कार्य सम्पूर्ण कार्योंको दूर करके परम कल्याणकी प्राप्ति करानेवाले हैं। गौएँ लक्ष्मी प्रदान करती हैं, उनमें पापका लेशमात्र नहीं है। गौएँ ही मनुष्योंको सर्वदा अन्न और देवताओंको हविष्य देनेवाली हैं। स्वाहा और वषट्कार सदा गौओंमें ही प्रतिष्ठित होते हैं। गौएँ ही यज्ञका संचालन करनेवाली तथा उसका मुख है। वे विकाररहित दिव्य अमृत धारण करती और दुहनेपर अमृत ही देती हैं। वे अमृतकी आधारभूता हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है। गौओंका समुदाय जहाँ बैठकर निर्भयतापूर्वक साँस लेता है, उस स्थानकी शोभा बढ़ा देता है और वहाँके सारे पापोंको खींच लेता है। गौएँ स्वर्गकी सीढ़ी हैं। गौएँ स्वर्गमें भी पूजी जाती हैं। गौएँ समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाली देवियाँ हैं। उनसे बढ़कर दूसरा कोई नहीं है और न उनके माहात्म्यका कोई वर्णन ही कर सकता है।[१]

इतना कहकर महर्षि चुप हो गये। तब निषादोंने राजाद्वारा प्राप्त गायको ग्रहण करनेके लिये महर्षिसे प्रार्थना की। महर्षिने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और कहा कि इस गोदानके प्रभावसे तुम्हारे सारे पाप-ताप नष्ट हो गये। अब तुम सभी शीघ्र ही इन मछलियोंके साथ स्वर्गलोकको प्राप्त करोगे। महर्षि च्यवन ऐसा कह ही रहे थे कि ये मल्लाह और मत्स्य-समूह स्वर्गलोकको जाने लगे। उन्हें स्वर्गकी ओर जाते देख राजा नहुषको बड़ा आश्चर्य हुआ। तब गोजात उन महर्षि तथा च्यवन मुनिने राजा नहुषको भी वर माँगनेके लिये कहा। राजाने धर्ममें बुद्धिके रहने तथा भगवद्भक्तिका वर माँगा। उनके तथास्तु कहनेपर राजाने उन दोनों ऋषियोंका विधिवत् पूजन किया। तदनन्तर महर्षि च्यवन अपने आश्रमपर चले गये और गोजात मुनि भी अपने स्थानकी ओर प्रस्थान किये।
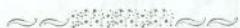
१—उत्तिष्ठाम्येष राजेन्द्र सम्यक् क्रीतोऽस्मि तेऽनघ। गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव। गवां प्रशस्यते वीर सर्वपापहरं शिवम्॥
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते। अन्नमेव सदा गावो देवानां परमं हविः॥
स्वाहाकारवषट्कारौ गोषु नित्यं प्रतिष्ठितौ। गावो यज्ञस्य नेत्र्यो वै तथा यज्ञस्य ता मुखम्॥
अमृतं ह्यव्ययं दिव्यं क्षरन्ति च वहन्ति च। अमृतायतनं चैताः सर्वलोकनमस्कृताः॥

× × ×

निविष्टं गोकुलं यत्र श्वासं मुञ्चति निर्भयम्। विराजयति तं देशं पापं चास्यापकर्षति॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः। गावः कामदुहो देव्यो नान्यत् किंचित् परं स्मृतम्॥
इत्येतद् गोषु मे प्रोक्तं माहात्म्यं भरतर्षभ। गुणैकदेशवचनं शक्यं पारायणं न तु॥
(महा० अनु० ५१। २६—३०, ३२—३४)

गोमाता एवं गोमती-विद्या

भारतमें प्रारम्भसे ही गो-वंशका अत्यधिक समादर होता चला आ रहा है। पुराणोंमें कथा आती है कि समुद्र-मन्थनके समय दिव्य कामधेनुका भी प्राकट्य हुआ था। वेदोंमें गायकी अपार महिमा निर्दिष्ट है। वेदोंका मुख्य उद्देश्य यज्ञ-कार्यका निर्वाह है, जिसके आधारपर सारा विश्व आधृत है एवं आप्यायित होता रहता है। इन यज्ञोंके प्रायः समस्त उपकरण गोमातासे ही प्राप्त होते हैं। अग्निप्रज्वलनमें गायोंके उपलका प्रयोग उत्कृष्ट माना गया है। पुनः पुरोडाश-निर्माण, हविष् द्रव्यकी कल्पना आदिमें आमीक्षा, घृत और इनके अभावमें गो-दुग्ध भी पर्याप्त माना गया है। यजमान यज्ञ-दीक्षाके समय पञ्चगव्यका प्राशन करता है। गव्य शब्द गायसे उत्पन्न द्रव्योंका ही निर्देशक है। पञ्चगव्य-प्राशनसे पूर्वके समस्त पाप जो अस्थि, मज्जातकमें प्रविष्ट होते हैं तत्काल नष्ट हो जाते हैं और वह समस्त पुण्य कर्मोंका अधिकारी हो जाता है। ऋषि-महर्षियोंकी दृष्टिमें गाय सात्त्विकता, पवित्रता, मङ्गलमयता, शक्ति और सुख-समृद्धिकी प्रतिनिधि मानी जाती है। यात्राके समय तथा प्रातःकाल सर्वप्रथम उसका दर्शन अभ्युदयका सूचक माना जाता था। वेदों तथा पुराणोंमें यहाँतक उल्लेख है कि गायके शरीरमें समस्त देवता तथा तीर्थ भी अधिष्ठित होते हैं और उसके रोम-रोममें तैंतीस करोड़ देवताओंका वास रहता है।

गायके शरीरको पवित्रताकी सीमा माना गया है। यहाँतक कि गो-शरीरका निकृष्ट द्रव्य मलतक भी महान् पवित्र और लक्ष्मीकी निवास-भूमि और उसका सम्बर्द्धन माना जाता है। उसके द्वारा उपलिप्त होनेपर समस्त कर्मकाण्ड, यज्ञ-याग-पूजा आदिकी भूमि सर्वथा निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, कल्याण और सिद्धिप्रदायिनी बन जाती है। इस बातका कल्पग्रन्थोंके प्रारम्भमें तर्क एवं युक्तिपूर्वक उल्लेख किया गया है। इसी प्रकार गोमूत्र भी गङ्गाके तुल्य पवित्र माना जाता है। आयुर्वेद आदिमें इसका अन्य कई अनेक विशिष्ट ओषधियोंके रूपमें उपयोग निर्दिष्ट हुआ है।

देवतागण यज्ञमें हविर्भूत अन्नोंमें जौ, तण्डुल, तिल आदि उन्हीं द्रव्योंको विशेष आदर एवं उत्सुकतासे ग्रहण करते हैं जो गायोंके खाद तथा बैलोंके द्वारा फालकृष्ट हल आदिसे संचालित बीज वपन-क्रियासे उत्पन्न हुए हों। ध्यान देनेपर समस्त सनातन वैदिक क्रियाएँ एवं दैनिक व्यवहार देवता, मन्त्र और गोजातिद्वारा उत्पन्न द्रव्योंतकमें ही सीमित एवं पर्यवसित दीखते हैं।

इस तरह स्पष्ट दीखता है कि गव्य पदार्थों—दूध, दही, घृत आदिके बिना यज्ञोंका निष्पादन सम्भव नहीं और यज्ञ एवं गोद्रव्यके बिना संसारका संचालन और पालन-पोषण तथा लोकयात्रा क्षणभर भी सम्भव नहीं। वेद-पुराणोंमें गो-वंशकी समृद्धिके लिये अत्यधिक ध्यान दिया गया है। कई पुराणोंमें यह स्पष्टरूपसे कहा गया है कि सृष्टिका आधार और सम्पूर्ण लोकयात्राको धारण करनेवाली प्रथम वस्तु गाय ही है। जहाँ पृथ्वी एवं लोकको धारण करनेवाले ब्राह्मण, वेदादि धर्मशास्त्र, पतिव्रता स्त्रियाँ, सदाचारी, निर्लोभी तथा दानशील संत-महात्मा, महापुरुषों—इन सात प्रकारके प्राणियोंका उल्लेख है वहाँ महत्त्वकी दृष्टिसे गायें ही सर्वप्रथम परिगणित हैं—

गोभिर्विप्रस्य वेदैश्च सतोभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही॥

(महाभारत, शिवपुराण)

गौओंके दर्शन, पूजा, नमस्कार, परिक्रमा, गौर-कण्डूति तथा गो-ग्रास देने, जल पिलाने आदि परिचर्याओंके द्वारा मनुष्यको दुर्लभ सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसके उदाहरणमें भगवान् श्रीकृष्ण, पाँचों पाण्डव, राजेन्द्र दिलीप और उनके कुलमें उत्पन्न प्रायः सभी रघुवंशी राजाओं एवं महर्षि वसिष्ठादिको

गो-सेवासे प्राप्त सिद्धियाँ इतिहासमें अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। गो-सेवासे सर्वथा दुर्लभ सिद्धियाँ एवं मनः-कामनाएँ भी शीघ्र सिद्ध हो जाती हैं, क्योंकि उसके शरीरमें सभी देवता, ऋषि, मुनि तथा गङ्गादि तीर्थोंका अधिष्ठान रहता है। भगवान् विष्णु भी गो-सेवासे सर्वाधिक प्रसन्न होते हैं और गो-सेवीको अनायास गो-लोककी प्राप्ति हो जाती है। अतः सभी ऋषि, महर्षि धर्मोंमें गो-सेवाको ही सर्वप्रथम और सर्वोत्कृष्ट धर्म मानते थे। ऋषियोंके शिष्य एवं उनके परिवार भी सर्वोत्कृष्ट गो-सेवाके लिये लालायित रहते थे। अतः उनके नामसे विभिन्न गोत्रोंका प्रचलन हुआ जो सभी वर्णोंमें गोभक्तिका प्रमाणरूपमें आज भी विद्यमान है। ''गोत्र'' शब्दका अर्थ ही अपने गुरुके गरुओंको सभी प्रकारके दुःख-क्लेशसे त्राण, रक्षा और श्रद्धापूर्वक परिचर्याका परिचायक है। सारांश यह है कि सारा भारतवर्ष ही आमूलचूड़ गोभक्त और गो-सेवाव्रती था और सम्पूर्ण देश भी निर्विवादरूपसे सुख-शान्ति, ज्ञान-विज्ञान, सौहार्दभाव तथा धन-धान्य एवं हिरण्यरत्नोंसे परिपूर्ण था और यहाँतक कि इसी गो-सेवाके बलपुर वह जगद्गुरुके पदपर भी दीर्घकालतक समासीन रहा।

विश्वके प्राचीनतम साहित्य वैदिक संहिताओं तथा अन्य ब्राह्मण-आरण्यक, उपनिषद् आदि समस्त वैदिक वाङ्मयके भी अधिकांश भागोंमें गो-महिमा, गो-रक्षाके एवं गो-पालनके विविध साधनोंका उल्लेख है और उनमें अनेक प्रकारकी कल्याणमयी गौओंका भी परिचय प्राप्त होता है। वेदोंके उपबृंहणभूत इतिहास-पुराणों तथा धर्मशास्त्रोंमें भी गो-माहात्म्यपर अपार सामग्री प्राप्त होती है। इन सबोंमें गो-सेवाके द्वारा सर्वोपरि श्रेय प्राप्त होने तथा इसी प्रकार गायको पीड़ा पहुँचानेमें महान् पातक तथा उसके फलस्वरूप क्लेश-प्राप्तिकी बात कही गयी है।

महाभारतके वैष्णव-धर्म नामक एक बृहद् अवान्तर-पर्वमें केवल गो-महिमाकी ही चर्चा हुई है। उसमें तथा विष्णुधर्मोत्तर तथा अग्नि आदि पुराणोंमें बड़े मधुर-आकर्षक एवं श्रद्धाके साथ वैदिक सूक्तोंका उपबृंहणस्वरूप गो-महिमाका निरूपण हुआ है। इस प्रकारकी सामग्री इतिहास-पुराणोंमें बहुत विस्तृत हैं, किंतु उनमें ''गोमती-विद्या'' नामकी एक विशिष्ट मन्त्रात्मक गोस्तुति प्राप्त होती है, जिसके पाठसे गृह, जनपद, राष्ट्र आदिमें गोवंशकी अभिवृद्धि होती है और मनुओंके क्लेश अनायास दूर हो जाते हैं। इस विद्याको अनेक औपनिषद तथा पौराणिक विद्याओंसे अधिक महत्त्व कहा गया है। गायोंके अत्यधिक वृद्धिके मूल कारण होनेसे इसे गोमती-विद्या कहा गया है और गरुओंकी वृद्धि होनेपर दधि, दुग्ध, घृत आदि शुद्ध बहुमूल्य द्रव्योंकी अभिवृद्धि होनेके कारण सभी प्रकारकी सुख-शान्ति रहती है। इससे देवता और समस्त विश्वके प्राणी परितृप्त हो जाते हैं। इसके पाठ करनेवालोंको लौकिक समृद्धियाँ और दिव्य ज्ञानकी प्राप्ति तो होती ही है साथ ही परलोक सर्वोत्तम भगवद्धाम गोलोककी प्राप्ति अनायास हो जाती है।

पुराणोंमें यद्यपि अग्नि आदिमें कई स्थानोंपर गोमती-विद्या-नामसे यह स्तुति प्राप्त होती है तथापि विष्णुधर्मोत्तरपुराणमें यह सर्वाङ्ग और परिपूर्णरूपसे सुरक्षित प्राप्त है, जहाँ अन्यकी अपेक्षा कुछ श्लोक अधिक प्राप्त होते हैं। यदि इस विद्याकी साङ्गोपाङ्ग व्याख्या की जाय तो बहुत-सी आवश्यक बातें ज्ञात हो जायँगी और उससे गायोंका समग्र माहात्म्य भी प्रकट हो जायगा, किंतु यहाँ विस्तारभयसे केवल उसका मूल पाठ तथा सामान्य भावानुवाद ही उपस्थित किया जा रहा है—

गोमतीं कीर्तयिष्यामि सर्वपापप्रणाशिनीम्। तां तु मे वदतो विप्र शृणुष्व सुसमाहितः॥
गावः सुरभयो नित्यं गावो गुग्गुलुगन्धिकाः। गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं परम्॥
अन्नमेव परं गावो देवानां हविरुत्तमम्। पावनं सर्वभूतानां रक्षन्ति च वहन्ति च॥
हविषा मन्त्रपूतेन तर्पयन्त्यमरान्दिवि। ऋषीणामग्निहोत्रेषु गावो होमे प्रयोजिताः॥
सर्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम्। गावः पवित्रं परमं गावो मङ्गलमुत्तमम्॥
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्यास्सनातनाः। (ॐ) नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च॥
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः। ब्राह्मणाश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा स्थितम्॥

एकत्र मन्त्रास्तिष्ठन्ति हविरेकत्र तिष्ठति। देवब्राह्मणगोसाधुसाध्वीभिः सकलं जगत्॥
धार्यते वै सदा तस्मात्सर्वे पूज्यतमाः सदा। यत्र तीर्थे सदा गावः पिबन्ति तृषिता जलम्॥
उत्तरन्ति पथा येन स्थिता तत्र सरस्वती॥
गवां हि तीर्थे वसतीह गङ्गा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा।
लक्ष्मीः करीषे प्रणतौ च धर्मस्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात्॥

(विष्णुधर्मोत्तरपु० द्वि० ख० ४२। ४९—५८)

जलाधिनाथ वरुणके पुत्र पुष्करद्वीपके स्वामी सर्वशास्त्रोंके ज्ञाता पुष्करभगवान् परशुरामके पूछनेपर इस विद्याका उपदेश करते हुए कहते हैं कि अब मैं गोमती-विद्याका वर्णन कर रहा हूँ जो समस्त पापोंका समूल उन्मूलन करनेवाली है, इसे आप पूर्णतया एकाग्रचित्त होकर सुनिये—

गौएँ नित्य सुरभिरूपिणी—गौओंकी प्रथम उत्पादिका माता एवं कल्याणमय, पुण्यमय सुन्दर श्रेष्ठ गन्धवाली हैं। वे गुग्गुलके समान गन्धसे संयुक्त हैं। गायोंपर ही समस्त प्राणियोंका समुदाय प्रतिष्ठित है। वे सभी प्रकारके परम कल्याण अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्षकी भी सम्पादिका हैं। गायें समस्त उत्कृष्ट अन्नोंके उत्पादनकी मूलभूता शक्ति हैं और वे ही सभी देवताओंके भक्ष्यभूत हविष्यान्न और पुरोडाश आदिकी भी सर्वोत्कृष्ट मूल-उत्पादिका शक्ति हैं। ये सभी प्राणियोंको दर्शन-स्पर्शादिके द्वारा सर्वथा शुद्ध, निर्मल एवं निष्पाप कर देती हैं। वे दुग्ध, दधि तथा घृत आदि अमृतमय पदार्थोंका क्षरण करती हैं तथा उनके वत्सादि समर्थ वृषभ बनकर सभी प्रकारके भारी बोझा ढोने और अन्न आदि-उत्पादनका भार वहन करनेमें समर्थ होते हैं। साथ ही वेदमन्त्रोंसे पवित्रीकृत हविष्योंके द्वारा स्वर्गमें स्थित देवताओंतकको ये ही परितृप्त करती हैं। ऋषि-मुनियोंके यहाँ भी यज्ञों एवं पवित्र अग्निहोत्रादि कार्योंमें हवनीय द्रव्योंके लिये गौओंके ही घृत, दुग्ध आदि द्रव्योंका प्रयोग होता रहा है (अतः वे गायोंका विशेष श्रद्धाभक्तिसे पालन करते रहे हैं)। जहाँ कोई भी शरणदाता नहीं मिलता है वहाँ विश्वके समस्त प्राणियोंके लिये गायें ही सर्वोत्तम शरण-प्रदात्री बन जाती हैं। पवित्र वस्तुओंमें गायें ही सर्वाधिक पवित्र हैं तथा सभी प्रकारके समस्त मङ्गलजात पदार्थोंकी कारणभूता हैं। गायें स्वर्ग प्राप्त करनेकी प्रत्यक्ष मार्गभूता सोपान हैं और वे निश्चित रूपसे तथा सदासे ही समस्त धन-समृद्धिकी मूलभूत सनातन कारण रही हैं। लक्ष्मीको अपने शरीरमें स्थान देनेवाली गौओंको नमस्कार। सुरभीके कुलमें उत्पन्न शुद्ध, सरल एवं सुगन्धियुक्त गौओंको नमस्कार। ब्रह्मपुत्री गौओंको नमस्कार। अन्तर्बाह्यसे सर्वथा पवित्र एवं सुदूरतक समस्त वातावरणको शुद्ध एवं पवित्र करनेवाली गौओंको बार-बार नमस्कार। वास्तवमें गौएँ और ब्राह्मण दोनों एक कुलके ही प्राणी हैं, दोनोंमें विशुद्ध सत्त्व विद्यमान रहता है। ब्राह्मणोंमें वेदमन्त्रोंकी स्थिति है तो गौओंमें यज्ञके साधनभूत हविष्यकी। इन दोनोंके द्वारा ही यज्ञ सम्पन्न होकर विष्णु आदि देवताओंसे लेकर समस्त चराचर प्राणियोंका आप्यायन होता है। यह सारा विश्व शुद्ध सत्त्वसे परिपूर्ण देवता, ब्राह्मण, गाय, साधु-सन्त-महात्मा तथा पतिव्रता सती साध्वी सदाचारिणी नारियोंके पुण्योंके आधारपर ही टिका हुआ है। ये ही धार्मिक प्राणी सम्पूर्ण विश्वको सदा धारण करते हैं। अतः ये सदा पूजनीय एवं वन्दनीय हैं। जिस जलराशिमें प्यासी गायें जल पीकर अपनी तृषा शान्त करती हैं और जहाँ-जहाँ जिस मार्गसे वे जलराशिको लाँघती हुई नदी आदिको पार करती हैं वहाँ-वहाँ गङ्गा, यमुना, सिन्धु, सरस्वती आदि नदियों या तीर्थ निश्चित रूपसे विद्यमान रहते हैं। गौ-रूपी तीर्थमें गङ्गा आदि सभी नदियाँ तथा तीर्थ निवास करते हैं और गौओंके रजःकणमें सभी प्रकारकी निरन्तर वृद्धि होनेवाली धर्म-राशि एवं पुष्टिका निवास रहता है। गायोंके गोबरमें साक्षात् भगवती लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं और इन्हें प्रणाम करनेमें चतुष्पाद धर्म सम्पन्न हो जाता है। अतः बुद्धिमान् एवं कल्याणकामी पुरुषको गायोंको निरन्तर प्रणाम करना चाहिये।

[एक बिलकुल सच्ची रोमाञ्चकारी गाथा]

(लेखक—भक्त श्रीरामशरणदासजी)

घटना सन् १९४७ की है।

भारतमाताके अङ्ग-भङ्ग, खण्ड-खण्ड होकर पाकिस्तान बननेकी घोषणा होते ही समस्त पंजाब, सिंध, बंगालमें मुस्लिम गुंडोंने हिंदुओंको मारना-काटना तथा ग्रामोंको आगकी लपटोंमें भस्मीभूत करना प्रारम्भ कर दिया था। हिंदुओंको या तो तलवारके बलपर हिंदू-धर्म छोड़कर मुसल्मान बननेको बाध्य किया जा रहा था, अन्यथा उन्हें मार-काटकर भगाया जा रहा था।

पंजाबके ग्राम टहलराममें भी मुसल्मानोंने हिंदुओंको आतङ्कित करना प्रारम्भ कर दिया। गुंडोंकी एक सशस्त्र भीड़ने हिंदुओंके घरोंको घेर लिया तथा हिंदुओंके सम्मुख प्रस्ताव रखा कि—'या तो सामूहिक रूपसे कलमा पढ़कर मुसल्मान हो जाओ, अन्यथा सभीको मौतके घाट उतार दिया जायगा।' बेचारे बेबस हिंदुओंने सोचा कि जबतक हिंदू मिलिट्री न आये इतने समयतक कलमा पढ़नेका बहाना करके जान बचायी जाय। उन्होंने मुसल्मानोंके कहनेसे कलमा पढ़ लिया, किंतु मनमें राम-रामका जप करने लगे।

'ये काफ़िर हमें धोखा दे रहे हैं। हिंदू-सेना आते ही जान बचाकर भाग जायँगे। इन्हें गो-मांस खिलाकर इनका धर्म भ्रष्ट किया जाय और जो गो-मांस न खाय, उसे मौतके घाट उतार दिया जाय।' —एक शरारती मुसल्मानने धर्मान्ध मुसल्मानोंकी भीड़को सम्बोधित करते हुए कहा।

'ठीक है, इन्हें गो-मांस खिलाकर इनकी परीक्षा की जाय।' मुसल्मानोंकी भीड़ने समर्थन किया।

मुसल्मानोंने गाँव टहलरामके प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा हिंदुओंके नेता पं० बिहारीलालजीसे कहा कि—'आप सभी लोग गो-मांस खाकर यह सिद्ध करें कि आप हृदयसे हिंदू-धर्म छोड़कर मुसल्मान हो गये हैं। जो गो-मांस नहीं खायेगा, उसे हम काफ़िर समझकर मौतके घाट उतार डालेंगे।'

पं० बिहारीलालजीने मुस्लिम गुंडोंके मुखसे गो-मांस खानेकी बात सुनी तो उनका हृदय
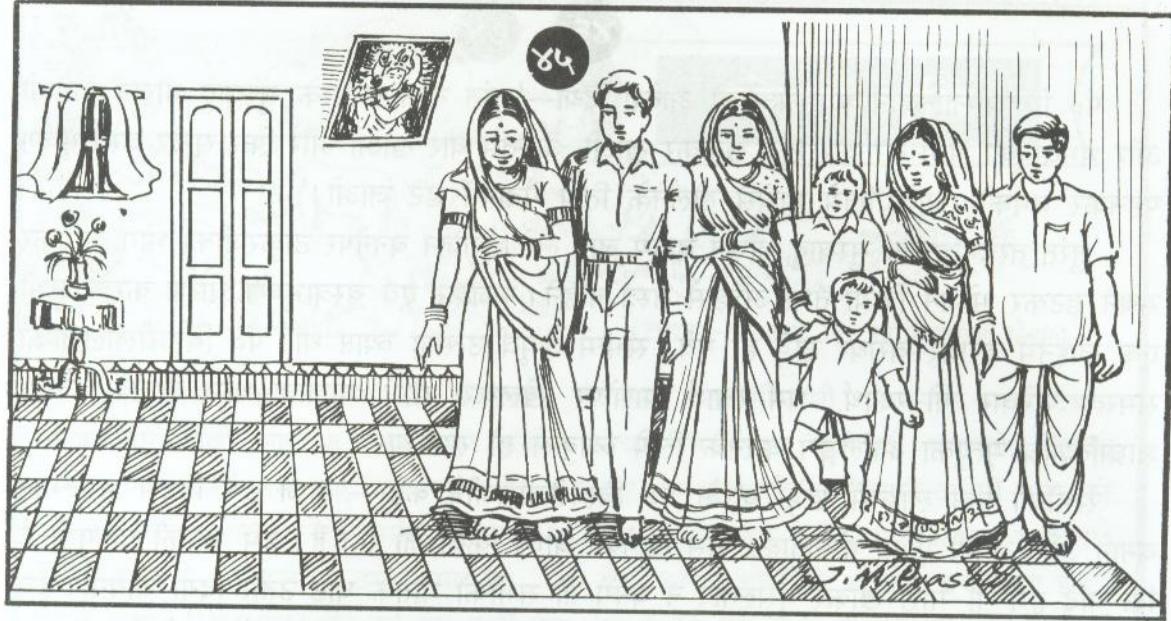
हाहाकार कर उठा! उन्होंने मनमें विचार किया कि धर्मकी रक्षाके लिये प्राणोत्सर्ग करने, सर्वस्व समर्पित करनेका समय आ गया है। उनकी आँखोंके सम्मुख धर्मवीर हकीकतराय तथा गुरु गोविंदसिंहके पुत्रोंद्वारा धर्मकी रक्षाके लिये प्राणोत्सर्ग करनेकी झाँकी उपस्थित हो गयी। वीर बंदा वैरागीद्वारा धर्मकी रक्षाके लिये अपने शरीरका मांस गरम-गरम चिमटोंसे नुचवाये जानेका दृश्य सामने आ गया।

पं० बिहारीलालजीने विचार किया कि इन गो-हत्यारे, धर्म-हत्यारे म्लेच्छोंके अपवित्र हाथोंसे मरनेकी अपेक्षा स्वयं प्राण देना अधिक अच्छा है। हमारे प्राण रहते ये म्लेच्छ हमारी बहिन-बेटियोंको उड़ाकर न ले जायँ और उनके पवित्र शरीरको इन पापात्माओंका स्पर्श भी न हो सके, ऐसी युक्ति निकालनी चाहिये।

पं० बिहारीलालजीने मुसल्मानोंसे कहा कि 'हमें चार घंटेका समय दो, जिससे सभीको समझाकर तैयार किया जा सके।' मुसल्मान तैयार हो गये।

पं० बिहारीलालजीने घर जाकर अपने समस्त परिवारवालोंको एकत्रित किया। घरके एक कमरेमें पत्नी, बहिन, बेटियाँ, बालक, बूढ़े—सभीको एकत्रित करके बताया कि 'मुसल्मान नराधम गो-मांस खिलाकर हमारा प्राणप्रिय धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं। अब एक ओर गो-मांस खाकर धर्म भ्रष्ट करना है, दूसरी ओर धर्मकी रक्षाके लिये प्राणोत्सर्ग करना है। सभी मिलकर निश्चय करो कि दोनोंमेंसे कौन-सा मार्ग अपनाना है।'

सभी स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्धोंने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया—'गो-मांस खाकर, धर्म-भ्रष्ट होकर परलोक बिगाड़नेकी अपेक्षा धर्मकी बलिवेदीपर प्राण देने अच्छे हैं। हम सभी मृत्युका आलिङ्गन करनेके लिये तैयार हैं।'

४८ हमारी 'भूरी माता'

(एक सत्य घटना)

(लेखक—श्रीयुत जगन्नाथ 'चित्रकार')

लगभग बीस वर्ष पहलेकी बात है। मेरी आयु १०-१२ वर्षकी थी, किन्तु मुझे इस घटनाका अक्षर-अक्षर याद है। हमारे घरमें 'भूरी' नामकी एक गाय थी। गाय सांसारिक पशु ही नहीं है, मनुष्योंका उपकार करनेके लिये आयी हुई दैवी आत्मा है—यह बात 'भूरी' सिद्ध कर रही थी। उसकी दिनचर्या यह थी, सबेरे बड़ी अच्छी तरह दूध दुहाकर बाहर निकल जाती थी। न हमें उसे चारा-पानी देना पड़ता था, न चरानेके लिये भेजना पड़ता था। दिनभर पता नहीं कहाँ रहती थी, क्या खाती थी, क्या पीती थी—हमलोग यह न जान पाते थे। सन्ध्याको फिर समयपर आ जाती थी और बड़े प्रेमसे पूरा दूध दुहा लेती थी। रातमें उसे बाँधनेका भी झंझट नहीं करना पड़ता था। घरके सामने ही वह कभी बैठी रहती और कभी टहला करती। सीधी इतनी थी कि हम बच्चे उसका थन मुँहमें भरकर माताके दूधके समान दूध चूसते थे, वह चुपचाप खड़ी रहती थी, कभी उसने इस डरसे पैर भी नहीं हिलाया कि किसी बच्चेको लग न जाय। ऐसी गायको क्या कहें, आप ही सोचिये। मुझे तो आज भी जब कभी उसकी याद आ जाती है, आँखें भर आती हैं।

उन दिनों पिताजीसे और एक पड़ोसीसे मुकद्दमेबाजी चल रही थी। हमारे पड़ोसी इस मिजाजके थे कि मौकेपर पा जाते तो हम बच्चोंको भी पिटवानेसे बाज न आते। इसीलिये हमें बाहर निकलकर घूमने-

फिरनेकी आज्ञा नहीं थी। हम भाइयोंमेंसे सबसे बड़े १६-१७ वर्षके थे। हमलोग घरके भीतर ही खेला करते। हमारे घरके पिछले भागमें थोड़ी-सी जमीन पड़ी थी। उसकी चहारदिवारी कुछ नीची थी। उस जमीनमें प्रायः कुछ साग-भाजी बो दी जाती थी। उन दिनों उसमें बंडा (अरवीकी एक जाति) बोया हुआ था। उसके पत्ते बहुत बड़े-बड़े थे। इतने बड़े कि एक पत्तेके नीचे एक आदमी आसानीसे अपनेको छिपा सकता था।
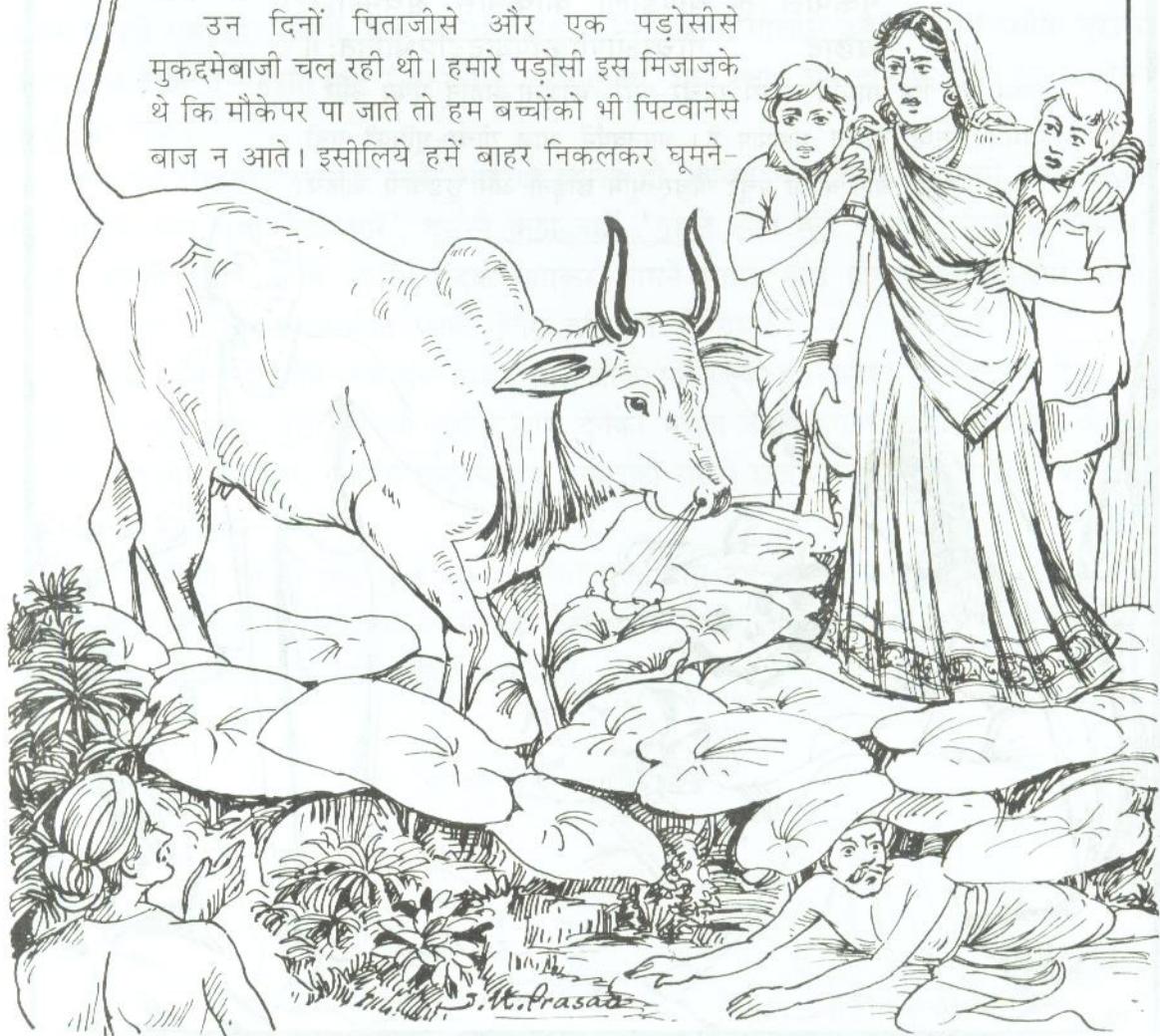
एक दिनकी बात है कि पिताजी घरपर नहीं थे। रातमें ४-५ चोर चहारदिवारी फाँदकर पिछवाड़े आ गये। संयोगसे उसी समय हमारी माँ हाथमें जलती हुई ढेबरी लिये हुए उधर ही लघुशंकाको गयीं। माँको देखते ही चोर पत्तोंमें छिपने लगे। कई पत्तोंके हिलने और शब्दसे माँको कुछ संदेह हुआ। वे उलटे पैरों लौट आयीं और हमलोगोंको जगाया। हम सभी जगे तो, पर करते क्या। बच्चे, बच्चे थे। चोरोंका नाम सुनते ही उलटा डर मालूम होने लगा। इतना साहस कहाँ कि डंडा लेकर जायँ और चोरोंका सामना करें। यद्यपि अब यह बात समझमें आयी कि यदि उस समय सभी भाई हाथमें कुछ लेकर उधर जाते और हल्ला करते तो चोर अवश्य भाग जाते, क्योंकि चोरका जी कितना, परन्तु उस समय डरनेके अतिरिक्त कुछ न सूझा। हमलोगोंको यही संदेह हुआ कि पिताजीको घरमें न जानकर पड़ोसीने ही तंग करनेके लिये आदमी भेजे हैं, हो सकता है यह बात न रही हो, पर हमें यही जान पड़ा।

माँने जब हमलोगोंको इस तरह डरते देखा तो उन्होंने कहा, डरो नहीं। उन्हें एक उपाय सूझा। वे बाहर गयीं। द्वार खोलकर देखा तो 'भूरी' बैठी पागुर कर रही थी। उन्होंने उसे आवाज दी, वह भीतर चली आयी। माँ घरके सब द्वार खोलती हुई और उसे पुकारती हुई पिछवाड़े ले गयीं। हमलोग भी पीछे-पीछे थे। माने खेतकी ओर इशारा करके कहा—'भूरी!' मा कुछ आगे बढ़ीं, भूरी भी बढ़ी। अब फिर कई पत्ते जोरसे हिलने लगे। 'भूरी' सब कुछ ताड़ गयी। वह खेतमें पिल पड़ी। जिसको पाया उसीकी पूजा की सींग और लातसे। वे लोग इधर-उधर भागने लगे! 'भूरी' दौड़-दौड़कर सबको मार रही थी। वे लोग अब छिपे न रह सके। 'भूरी' ढूँढ़-ढूँढ़कर मार रही थी। जिसके एक लात लगती वही 'अरे बाप, अरे माई' चिल्लाने लगता। वे सब रो-रोकर कहने लगे—'माता! गैयाको बुला लो, हमें अपनी करनीका फल मिल गया। अब हम कभी इस घरमें न घुसेंगे।' जब उन लोगोंने बहुत रोया-गिड़गिड़ाया तो मा भी तो आखिर मा थी, उन्हें दया आ गयी। उन्होंने 'भूरी'को पुकारा। 'भूरी' मैया पीछे हटकर हमलोगोंके पास आ गयी, किन्तु क्रोधके कारण फिर भी उसके नथुने बोल रहे थे। उस समय वह चण्डी बनी हुई थी। बार-बार सींग उछाल-उछालकर संकेत करती थी कि आप रोकिये मत, इन दुष्टोंको मारने दीजिये।

माने चोरोंसे कहा, 'तुमलोग जैसे आये हो, वैसे ही जल्दीसे चले जाओ और फिर कभी यहाँ न आना।' वे धरती छू-छूकर प्रणाम करने लगे और चहारदिवारी फाँदकर भाग गये।

हमलोगोंने बहुत देरतक 'भूरी' के बदनपर हाथ फेरा। उसकी ललरी सुहलायी, तब वह कहीं शान्त हुई। थोड़ी देर बाद वह फिर बाहर चली गयी और हमलोग 'भूरी' माताके गुण गाते-गाते सो गये!

दुधारू गौकी परीक्षा

(लेखक—मन्त्री, गोपालसङ्घ, शोलापुर)

हमलोगोंमेंसे बहुतोंको इसका अनुभव हुआ होगा कि गौ रखनेकी इच्छा होनेपर भी अच्छी गौ न मिलनेसे जैसी-तैसी गौ रखकर पीछे कष्ट ही होता है और यही कहना पड़ता है कि बाज आये इस झगड़ेसे। पर ऐसा इसीलिये होता है कि हम गौ खरीदते समय यह देख नहीं लेते कि गौ दुधारू है या नहीं। इस विषयकी कोई जानकारी ही नहीं होती। ग्वाले जानते हैं, परखते हैं, पर खुलकर सब भेद नहीं बतलाते। इसलिये जरूरी है कि हमलोग इसकी आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लें। जानकार लोगोंने दुधारू गौकी पहचानोंका संग्रह किया है। विशेषज्ञोंको अवश्य इसमें कोई नया विशेष ज्ञान नहीं मिलेगा, पर सर्वसाधारणके लिये ये पहचानें उपयोगी होंगी, इसलिये यहाँ दी जाती हैं।

गौकी बगलमें खड़े होकर देखना

गौकी बगलमें खड़े होकर देखनेसे पहले उसका आकार देख पड़ेगा। कंधोंसे लेकर पूँछतक उसकी लम्बाई काफी होनी चाहिये। पीठ लचकी हुई न हो, मेरुदण्ड ऊपर उठा हुआ हो और उसके मनके अलग-अलग दिखायी दें। पेटका घेरा जितना ही बड़ा होगा, उतना ही वह अधिक खानेवाली होगी और उतना ही दूध भी अधिक देगी। यह ध्यानमें रहे कि कम खाकर अधिक दूध देनेवाली गौकी सृष्टि अभीतक नहीं हुई है। पेटकी पसलियाँ जब उठी हुई और फैली हुई होती हैं, तब पेटमें चारा-पानीके लिये अधिक अवकाश होता है। दूध देनेवाली गौके शरीरपर मांस अधिक नहीं होता, क्योंकि वह जो कुछ खाती है, उससे दूध ही अधिक निर्माण होता है। हाँ, गाभिन होनेपर पौष्टिक पदार्थ खानेको मिलें तो वह अवश्य ही पुष्ट होती है। गौके बदनपर हाथ फेरकर देख लेना चाहिये। यदि खाल मुलायम और पतली हो तो यह अच्छा लक्षण है; यदि खाल मोटी हो तो यह समझना चाहिये कि रक्ताभिसरण ठीक नहीं हो रहा है। और रोएँ घने हों तो समझना चाहिये कि इसकी परवरिश ठीक तरहसे नहीं हो रही है और इसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है।

पीठके पीछे खड़े होकर देखना

पीठके पीछे खड़े होकर गौकी ओर देखनेसे पेटका भराव देख पड़ता है। पुट्ठों और नितम्बोंकी चौड़ाई सामने आ जाती है। पुट्ठोंका चौड़ा होना यह सूचित करता है कि गर्भाशयमें अर्भकका पोषण ठीक तरहसे होता है। गौके थनका पिछला भाग और चूँचियाँ भी यहाँसे देख पड़ते हैं। गौकी जाँघें भरी हुई और दोनों जाँघोंके बीच काफी अन्तर होना चाहिये जिसमें थनके समानेके लिये पूरा अवकाश हो।

पेटके नीचेसे देखना

गौके पेटपर 'दूधवाली शिरा' होती है। यह थनकी ओर रक्त पहुँचानेवाली रक्तवाहिनी है। यह जितनी लम्बी और बड़ी होगी, थन उतना ही अधिक पोसा जायगा और उतना ही उसमें दूध उत्पन्न होगा। इसीलिये इस रक्तवाहिनीको दूधवाली शिरा कहते हैं। यह पेटके नीचे जितनी ही स्पष्ट देख पड़े और थनके ऊपरकी नसें भी जितनी स्पष्ट लक्षित हों, उतना ही यह समझना चाहिये कि गौ दुधारू है। थनका अगला भाग भी यहींसे देख लेना चाहिये। थन बड़ा और पेटके बराबरमें हो। लटक आया हुआ या मांसल न हो और उसपरकी नसें साफ देख पड़ें। आगे और

पीछे दोनों ओर थन पेटसे सटा हुआ हो। चारों चूँचियाँ बराबर फासलेपर और एक-सी बढ़ी और भरी हुई हों। बहुत पतली चूँचियोंसे, जो अँगुलियोंमें भी न आयें, दूध भी कितना निकलेगा। अन्य सब लक्षणोंकी अपेक्षा थन और चूँचियोंकी परखमें ही अधिक ध्यान देना चाहिये।

गौके सामने खड़े होकर देखना

सामनेसे गौका मुँह देख पड़ता है। उसका जबड़ा और नथुने चौड़े हों, आँखें पानीदार हों। गौ सीधी है या नहीं, यह उसका मुँह देखनेसे पता चलता है। दाँतोंसे उसकी उम्रका अनुमान होता है। गायके नीचेवाले जबड़ेमें ८ (दूधिया) दाँत होते हैं। दो वर्ष बाद बीचके दो (दूधिया) दाँत गिर जाते और उनके स्थानमें दो बड़े (स्थायी) दाँत निकलते हैं। इस तरह हर साल दो-दो बड़े दाँत निकलते और पाँच वर्षमें आठों बड़े (स्थायी) दाँत पूरे हो जाते हैं। पाँच-छः वर्षके बाद ज्यों-ज्यों गौ ढलने लगती है, त्यों-त्यों उसके दाँत भी घिसते जाते हैं और खूँटी-सरीखे होने लगते हैं। गायके ऊपरके जबड़ेमें दाँत नहीं होते। इन नीचेके दाँतोंसे घास-चारा काटकर वह पेटमें उतारती है और पीछे दोनों जबड़ोंके किनारेकी मजबूत दाढ़ोंसे चबाकर (जुगाली करके) निगल जाती है।

गौके कानोंमें यदि कुछ पीली-सी चमक दिखायी दे तो समझना चाहिये कि गौ दुधारू है और उसके दूधमें मक्खनका अंश अधिक है। गौका गलकम्बल पतला होना चाहिये, इससे यथेष्ट वायु अंदर खींचनेमें उसे सुविधा होती है और वह नीरोग रहती है। पेटका घेरा भी सामनेसे देख पड़ता है। पिछले पैरोंकी तरह अगले पैर भी दूर-दूर हों।

पीठपरसे देखना

पीठपरसे नीचे देखनेसे भी पेटका आकार और पुट्ठे दीख पड़ते हैं। पुट्ठा एकदम उतारदार न हो। यदि दुहती गाय खरीदी जाय तो बिना अन्तर दिये तीन-चार बार स्वयं दूध निकालकर देख लेना चाहिये। दूध निकालते समय पात्रमें धार गिरनेका जो शब्द होता है, उसके द्वारा भी गाय दुधारू है या नहीं, इसकी परीक्षा होती है। थनमें यदि दूध अधिक होगा तो पात्रमें धारके गिरते समय जोरसे शब्द होगा। यदि दूध अधिक न हुआ तो धार पतली होगी और शब्द भी धीमा ही होगा। पाश्चात्त्य-पद्धतिसे गौकी परीक्षा करनेकी एक और रीति है।

१. पीठपरसे देखनेपर गायका शरीर गलेसे पीछेकी ओर दोनों तरफ चौड़ा होता चला गया हो तो यह लक्षण अच्छा है। ऐसी गायके उदर तथा पाकाशयका पूर्ण विकास हुआ समझा जाता है। वह भरपूर खा सकती है और पचा भी सकती है।

२. बगलसे देखनेपर गायके गलेसे पूँछतकका भाग चढ़ता और गलकम्बलसे थनतकका भाग उतरता हुआ चला गया हो। ऐसी गायका थन बड़ा होता है और उसमें दूध भी भरपूर होता है। उसी प्रकार गर्भाशयमें गर्भके विकासके लिये पर्याप्त स्थान मिल जाता है और उससे बच्चा बलिष्ठ होता है।

३. सामनेसे देखनेपर दोनों तरफ गौका शरीर ऊपरसे नीचेकी ओर चौड़ा होता हुआ देख पड़े। इससे गौके फुफ्फुस और हृदय पूर्ण विकसित तथा बलिष्ठ हुए समझना चाहिये।

सारांश यह कि ऊपरसे, बगलसे अथवा सामनेसे किसी ओरसे भी देखनेपर गौका शरीर सब ओरसे तिहरे पच्चर (Triple Wedge) की तरह (एक ओरसे दूसरी ओर बारीक होता हुआ) दिखायी देना चाहिये। उसका यह आकार जितना पूर्ण होगा, उतनी ही वह अधिक दुधारू होगी।

(गो० शा० को०)

गायका दूध बढ़ानेके उपाय

१. प्रतिदिन हरी ताजी घास पेटभर खिलाना।

२. दूध दुहकर उसीको पिला देना।

३. गुड़ एक भाग और जौ तीन भाग एक साथ पकाकर रोज खिलाना।

४. गोभी और पत्ता-गोभीकी पत्तियाँ खिलाना।

५. पपीतेके कच्चे फल और पपीतेकी पत्ती पीसकर गुड़ मिलाकर खिलाना।

६. सनके फूल, महुआके फूल, घास और गुड़ जलमें उबालकर खिलाना।

७. ऊखकी गँड़ेरी या ऊखका रस निकाल लेनेपर बचा हुआ कूचा खिलाना।

८. तीसीकी खल और उबाला हुआ मटर खिलाना।

९. किसारीकी दालके साथ गेहूँ उबालकर खिलाना।

१०. गुँवार खूब पकाकर या रातभर जलमें भिगोकर खिलाना।

११. गुड़ और काँजी मिलाकर खिलाना।

१२. घी, मैदा और गुड़ मिलाकर पकाकर खिलाना। इससे खूब दूध बढ़ता है।

१३. बीजवाले केलेको चावलके साथ उबालकर खिलाना।

१४. पके या कच्चे बेलको उबालकर खिलाना।

१५. पलास और सेमलके फूल खिलाना।

१६. प्रसवके तीसरे दिन उड़दका दलिया आधा सेर, नमक एक छटाँक, हल्दी आधी छटाँक और पीपलका चूर्ण एक छटाँक—इन सब चीजोंको मिलाकर पानीमें पका लेना चाहिये और फिर उसमें पावभर गुड़ मिलाकर कुछ गरम-गरम ही संध्याके समय गायको खिलाना चाहिये। इससे दूध बहुत बढ़ता है।

१७. गिलोयकी पत्ती और उसकी बेल खिलानेसे भी दूध बहुत बढ़ता है।

१८. जीरा १० भाग, नमक १० भाग, सौंफ १० भाग, लौंग ५ भाग, सफेद चन्दन २ भाग, फिटकिरी १ भाग और नाइट्रेट आफ पोटाशियम १ भाग—इन सब चीजोंको कूटकर रखे और सुबह-शाम दोनों वक्त एक-एक मुट्ठी गायके दानेके साथ मिला दे तो खूब दूध बढ़ता है।

१९. बाँसकी पत्ती आधी छटाँक उबालकर उसमें थोड़ी-सी अजवाइन और गुड़ मिलाकर खिलानेसे दूध बढ़ता है।

२०. प्रसवके बाद दूध बंद होकर यदि थन कड़ा हो जाय तो रेड़ीके पत्तोंसे सेक करना चाहिये।

२१. गायके दूध बढ़नेका सर्वोत्तम तरीका यह है कि गायको उसी साँड़से बर्धाया जाय जिसकी माँ बहुत ज्यादा दूध देनेवाली रही हो।

'गीताप्रेस' गोरखपुरकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गोरखपुर-२७३००५	गीताप्रेस—पो० गीताप्रेस website:www.gitapress.org / e-mail: booksales@gitapress.org	✆ (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स २३३६९९७
दिल्ली-११०००६	२६०९, नयी सड़क	✆ (०११) २३२६९६७८; फैक्स २३२५९१४०
कोलकाता-७००००७	गोबिन्दभवन-कार्यालय; १५१, महात्मा गाँधी रोड e-mail:gobindbhawan@gitapress.org	✆ (०३३) २२६८६८९४; फैक्स २२६८०२५१
मुम्बई-४००००२	२८२, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) मरीन लाईन्स स्टेशनके पास	✆ (०२२) २२०३०७१७
कानपुर-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	✆ (०५१२) २३५२३५१; फैक्स २३५२३५१
पटना-८००००४	अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने	✆ (०६१२) २३००३२५
राँची-८३४००१	कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिड़ला गद्दीके प्रथम तलपर	✆ (०६५१) २२१०६८५
सूरत-३९५००१	वैभव एपार्टमेन्ट, नूतन निवासके सामने, भटार रोड e-mail: suratdukan@gitapress.org	✆ (०२६१) २२३७३६२, २२३८०६५
इन्दौर-४५२००१	जी० ५, श्रीवर्धन, ४ आर. एन. टी. मार्ग	✆ (०७३१) २५२६५१६, २५११९७७
जलगाँव-४२५००१	७, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास	✆ (०२५७) २२२६३९३ ; फैक्स २२२०३२०
हैदराबाद-५०००९५	४१, ४-४-१, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार	✆ (०४०) २४७५८३११
नागपुर-४४०००२	श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, ८५१, न्यू इतवारी रोड	✆ (०७१२) २७३४३५४
कटक-७५३००९	भरतिया टावर्स, बादाम बाड़ी	✆ (०६७१) २३३५४८१
रायपुर-४९२००९	मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक	✆ (०७७१) ४०३४४३०
वाराणसी-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	✆ (०५४२) २४१३५५१
हरिद्वार-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	✆ (०१३३४) २२२६५७
ऋषिकेश-२४९३०४	गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम e-mail:gitabhawan@gitapress.org	✆ (०१३५) २४३०१२२, २४३२७९२
कोयम्बटूर-६४१०१८	गीताप्रेस मेंशन, ८/१ एम, रेसकोर्स	✆ (०४२२) ३२०२५२१
बेंगलोर-५६००२७	१५, फोर्थ 'इ' क्रास, के० एस० गार्डेन, लालबाग रोड	✆ (०८०) २२९५५१९०, ३२४०८१२४

स्टेशन-स्टाल — **दिल्ली** (प्लेटफार्म नं० १२); **नयी दिल्ली** (नं० १६); **हजरत निजामुद्दीन** [दिल्ली] (नं० ४-५); **कोटा** [राजस्थान] (नं० १); **बीकानेर** (नं० १); **गोरखपुर** (नं० १); **कानपुर** (नं० १); **लखनऊ** [एन० ई० रेलवे]; **वाराणसी** (नं० ४-५); **मुगलसराय** (नं० ३-४); **हरिद्वार** (नं० १); **पटना** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं० १); **धनबाद** (नं० २-३); **मुजफ्फरपुर** (नं० १); **समस्तीपुर** (नं० २); **हावड़ा** (नं० ५ तथा १८ दोनोंपर); **कोलकाता** (नं० १); **सियालदा मेन** (नं० ८); **आसनसोल** (नं० ५); **कटक** (नं० १); **भुवनेश्वर** (नं० १); **अहमदाबाद** (नं० २-३); **राजकोट** (नं० १); **जामनगर** (नं० १); **भरूच** (नं० ४-५); **इन्दौर** (नं० ५); **वडोदरा** (नं० ४-५); **औरंगाबाद** [महाराष्ट्र] (नं० १); **सिकन्दराबाद** [आं० प्र०] (नं० १); **गुवाहाटी** (नं० १); **खड़गपुर** (नं० १-२); **रायपुर** [छत्तीसगढ़] (नं० १); **बेंगलोर** (नं० १); **यशवन्तपुर** (नं० ६); **श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम्** [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० १) एवं **अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली**।

फुटकर पुस्तक-दूकानें

चूरू-३३१००१	ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क ✆ (०१५६२) २५२६७४
ऋषिकेश-२४९१९२	**मुनिकी रेती**
तिरुपति-५१७५०४	शॉप नं० ५६, टी० टी० डी० मिनी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, तिरुमलाई हिल्स
बेरहामपुर-७४२१०१	म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, ब्लाक-बी, स्टाल नं० ५७—६०, प्रथम तल, के० एन० रोड (मुर्शिदाबाद)

ISBN 81-293-0447-3
9 788129 304476